अगस्त 2021

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

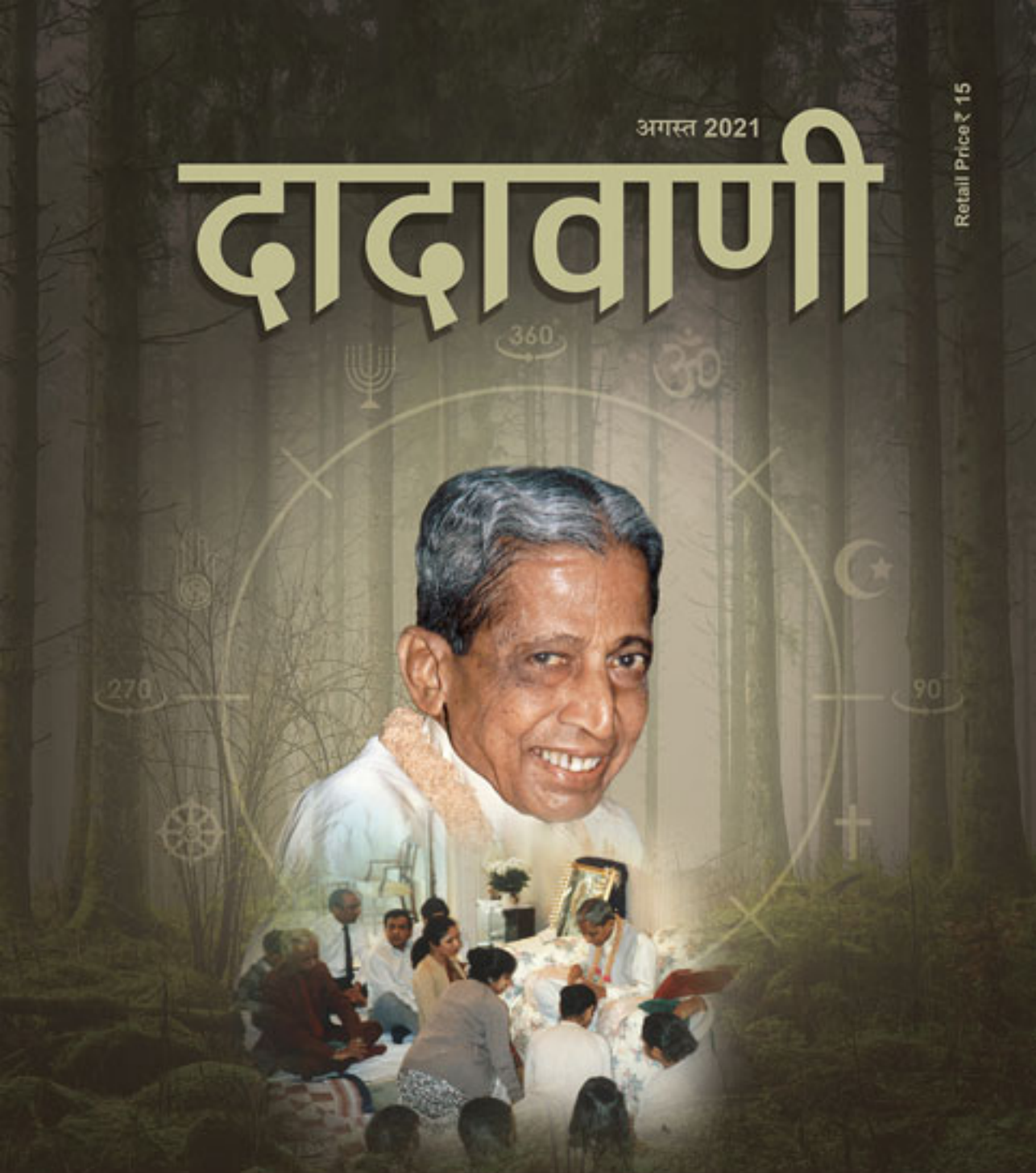

किसी भी धर्म के प्रमाण को किंचित्मात्र भी ठेस न लगे, ऐसी वाणी बोले, उसे कहते हैं स्याद्वाद। हर एक व्यू पोइन्ट को दृष्टि में रखे। एक से लेकर तीन सौ साठ डिग्री तक के जो व्यू पोइन्टस हैं न, उन सभी व्यू पोइन्टस को दृष्टि में रखे।

भावनगर : त्रिमंदिर का भूमिपूजन : दि. 21 जून 2021

धांगध्रा : त्रिमंदिर का भूमिपूजन : दि. 22 जून 2021

अडालज : पूज्य नीरू माँ के ज्ञानदिन का उत्सव : ता. 8 जुलाई 2021

वर्ष : 16 अंक : 10
अखंड क्रमांक : 190
अगस्त 2021
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2021
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 650 रुपये
यू.एस.ए. : 60 डॉलर
यू.के. : 45 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

स्याद्वाद व अनेकांत

संपादकीय

हम सभी प्रात:विधि में रोज़ बोलते हैं कि, 'प्राप्त मन-वचन-काया से इस संसार के किसी भी जीव को किंचित् भी दु:ख न हो...' लेकिन दादाश्री कहते हैं कि, 'इस काल में सब से ज़्यादा दु:ख वाणी से दे दिया जाता है।' उसके निवारण के लिए भी हम रोज़ नौ कलमों में शक्ति माँगते हैं कि, 'किसी का अहम् न दुभे, ऐसी स्याद्वाद वाणी, स्याद्वाद वर्तन और स्याद्वाद मनन करने की शक्ति दीजिए।' लेकिन क्या इस स्याद्वाद शब्द का यथार्थ अर्थ हमें समझ में आया है?

परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) स्याद्वाद शब्द को विशेष रूप से समझाते हुए बताते हैं कि स्याद्वाद अर्थात् किसी के भी दृष्टि बिंदु को गलत न ठहराए। सभी के दृष्टि बिंदु, व्यू पोइन्ट को स्वीकार करे। हर एक स्टैन्डर्ड, हर एक डिग्री, हर एक धर्म को एक्सेप्ट करे। इससे भी ज़्यादा, स्याद्वाद वाणी संपूर्ण होती है। वह किसी को अड़चन नहीं पहुँचाती, किसी के विचारों को ठेस नहीं पहुँचाती, किसी से मतभेद नहीं होने देती। हर एक को अनुकूल लगती है, हर एक की श्रद्धा को स्वीकार करती है। स्याद्वाद वर्तन वह है कि जो मन का हरण कर ले। स्याद्वाद मनन अर्थात् किसी के भी विचारों का प्रमाण न दुभाए। स्याद्वाद अर्थात् हर एक के व्यू पोइन्ट से एडजस्ट होकर सेन्टर में रहना। यानी कि तीन सौ साठ डिग्री। ऐसी वाणी बोले कि किसी भी डिग्री वाले का प्रमाण न दुभे।

स्याद्वाद शब्द को अधिक गहराई से समझाते हुए दादाश्री कहते हैं कि, 'स्याद्वाद अर्थात् एक में रहना और अलग-अलग भाव से रहना।' यानी कि होम डिपार्टमेन्ट में रहना, फ़ॉरेन में नहीं। और अंत में, स्याद्वाद यानी अपनी कोई दुकान नहीं, 'सब' जो है, वह हमारा और निश्चय से जो हमारा है, वह हमारा। स्याद्वाद वाणी यानी सैद्धांतिक वीतराग वाणी। वीतराग अर्थात् स्याद्वाद और अनेकांत। अनेकांत अर्थात् आग्रही नहीं, निराग्रही वाणी। जो सभी दृष्टि बिंदुओं को खुद में समा ले, वह है अनेकांत वीतराग धर्म। जब स्याद्वाद वाणी को समझ जाएगा तब मोक्षमार्ग हाथ में आएगा।

प्रस्तुत अंक में, दादाश्री की स्याद्वाद वाणी की सूक्ष्मता दृष्टिगोचर होती है। उसकी अद्भुतता का अनुभव होने पर हृदय अहो भाव से गद्-गद् हो जाता है! दादाश्री ने अलग-अलग वेल्डिंग के साथ स्याद्वाद शब्द का विश्लेषण किया है, जो प्रैक्टिकली, निर्दोष दृष्टि का विकास करने में बहुत सहायक सिद्ध होगा। जो आत्मार्थ के अलावा अन्य किसी हेतु से नहीं निकली है। ऐसी अलौकिक स्याद्वाद वाणी युगों-युगों तक, मोक्षमार्ग के पंथ को प्रकाशित करती रहेगी। महात्माओं अब हम व्यू पोइन्ट में शक्तियाँ व्यर्थ खर्च किए बगैर निश्चय और व्यवहार दोनों को प्रतिपादित करती इस, वचनबल वाली स्याद्वाद वाणी का अभ्यास करके, स्याद्वाद वाणी के मर्म को प्राप्त करें, यही अभ्यर्थना।

- **जय सच्चिदानंद**

स्याद्वाद व अनेकांत

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

आध्यात्मिक प्रगति के लक्षण

प्रश्नकर्ता : आध्यात्मिक स्टडी करने वाला उस पूर्णता तक पहुँच गया है, ऐसा पता कैसे चलेगा?

दादाश्री : अन्य तो कुछ तो नहीं लेकिन उसकी वाणी पर से पता चल जाता है कि उसके कितने जन्म बाकी हैं! क्योंकि वाणी, वह कितने जन्म बाकी हैं उसे दिखाने का साधन है। वह स्थूल वाणी, सूक्ष्म वाणी, सूक्ष्मतर है और सूक्ष्मतम में से कौन से प्रकार की वाणी है? अत: वास्तव में कौन सी वाणी अंतिम कही जाती है? जब सभी धर्म वाले बैठे हों लेकिन किसी को भी दु:ख हो, ऐसी पक्षपाती वाणी नहीं हो तब एक-दो-तीन जन्मों में वह मोक्ष में जा सकता है और जब तक पक्षपाती है तब तक मोक्ष के लिए अभी सौ जन्मों तक भी उसका कोई ठिकाना नहीं पड़ेगा।

उनकी वाणी वीतराग होती है, बातें वीतराग होती हैं, वर्तन वीतराग होता है। उनकी हर एक बात में वीतरागता होती है। कोई गालियाँ दे तब भी वीतरागता और कोई फूल चढ़ाए तब भी वीतरागता रहती है। उनकी वाणी स्याद्वाद होती है अर्थात् किसी भी धर्म के, किसी भी जीव के प्रमाण को ठेस नहीं लगती।

यदि कोई गालियाँ दे तब स्याद्वाद क्या कहता है? वह गुनहगार नहीं है, स्याद्वाद उसे ऐसा ज्ञान देता है। क्या ज्ञान देता है? यदि सामने वाला इंसान गाली दें तो, स्याद्वाद क्या कहता है कि, 'वह उसका दृष्टि बिंदु है।' क्या है?

प्रश्नकर्ता : गाली देने वाले का दृष्टि बिंदु है।

दादाश्री : हाँ, अत: आपका गुनाह है। इंसान को उसके दृष्टि बिंदु से जैसा दिखाई देता है वैसा ही वह बोलता है।

समझेंगे वीतरागों का स्याद्वाद

वाणी का ऐसा है कि 'एट-ए-टाइम' वह दो व्यू पोइन्ट नहीं बता सकती। अत: व्यक्त करने के लिए दूसरी बार उसे दूसरा वाक्य बोलना पड़ता है। 'दर्शन' में 'एट-ए-टाइम' समग्र रूप से देखा जा सकता है लेकिन यदि उसका वर्णन करना हो तो, कोई भी इंसान 'एट-ए-टाइम' उसे व्यक्त नहीं कर सकता। इसलिए वाणी स्याद्वाद कहलाती है।

वाणी में नेगेटिव और पॉज़िटिव, दोनों बातें एक साथ नहीं बोली जा सकती। यदि एक साथ बोलने जाए तब या तो नेगेटिव बोलने पर पॉज़िटिव अधूरा रह जाता है अथवा पॉज़िटिव बोलने पर नेगेटिव अधूरा रह जाता है। अत: एक साथ नहीं बोला जा सकता न! इसलिए फिर वीतरागों को कहना पड़ा कि, 'जगत् अनादि-अनंत है!' पॉज़िटिव और नेगेटिव एक साथ नहीं बोल पाए, इसलिए ऐसा अनादि-अनंत कहना पड़ा!

'स्याद्वाद' द्वारा क्या कहना चाहते हैं?

शब्द अपना भाव पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं कर सकते। एक शब्द से हम दो भाव व्यक्त नहीं कर सकते। यदि दोनों भाव बताने की इच्छा हो तब भी नहीं। अत: फिर सारे शब्द लड़ेंगे इसलिए हो सके उतना कम बोलो। और यदि बहुत ज़रूरी हो तो, लिखकर दे देना। उसमें सभी भाव बताए जा सकते हैं। आगे और पीछे का पढ़ सकते हैं जबकि बोलने में तो एक शब्द से दो भाव हो ही नहीं सकते। अत: भगवान ने इसे 'स्याद्वाद' कहा। और मैंने क्या कहा कि 'यह जो बोल रहे हैं, वह सारी टेपरिकॉर्ड है!'

मामा का बेटा भाई लगता है व किसी और तरह से वह साला भी लगता है तो एट-ए-टाइम दोनों नहीं कह सकते। अत: एक ही चीज़ बोलनी पड़ती है। दोनों को एक साथ कैसे कहा जा सकता है।

प्रश्नकर्ता : वह संभव ही नहीं है।

दादाश्री : स्याद्वाद तो भगवान ने इसलिए दिया कि आत्मा कर्ता है! तब कहे कि किसी संदर्भ से कर्ता भी है और किसी संदर्भ से कर्ता नहीं है। स्याद् अस्ति, स्याद् नास्ति।

प्रश्नकर्ता : स्याद् अस्ति, स्याद् नास्ति और अंग्रेजी में इन्डिसिज़न कहा जाएगा, अनिर्णय कहा जाएगा?

दादाश्री : अनिर्णय, वह तो है ही, लेकिन वह अनिर्णय की बात नहीं है। परंतु आत्मा को कर्ता कहना है जबकि वास्तव में आत्मा अकर्ता है फिर भी कर्ता कहना पड़ता है। अत: भगवान ने यह स्याद्वाद रखा है। इस दृष्टि से आत्मा कर्ता है और इस दृष्टि से आत्मा कर्ता नहीं है।

कोई भी इंसान एक ही शब्द में हर तरह से व्यक्त नहीं कर सकता। इसलिए हमारे शब्द ऐसे लगते हैं और इसीलिए भगवान के शब्द भी ऐसे लगते थे। अब लोगों को यह समझना चाहिए न! एट-ए-टाइम वाणी दोनों बातों को व्यक्त नहीं कर सकती। यह सब आपको समझ में आया? इसलिए स्याद्वाद कहा जाता है न!

प्रश्नकर्ता : वाणी आंशिक होने की वजह से समग्र दर्शन व्यक्त नहीं कर सकती, वह आंशिक दर्शन है।

दादाश्री : हाँ! उसे यदि समग्र कहा तब तो काम ही हो जाएगा न!

तीर्थंकर भगवान की वाणी स्याद्वाद थी। जबकि लोग क्या कहते हैं? हमारा सही और आपका गलत! सारी वाणी वह स्याद्वाद वाणी नहीं है। एकांतिक कहलाता है, वह आग्रह कहलाता है, दुराग्रह कहलाता है।

ये तो नग्न सत्य बोल देते हैं एकदम से... यदि वीतरागों का स्याद्वाद समझ जाएँ तो, कुछ समझने को बाकी नहीं रहेगा। क्योंकि वीतराग अर्थात् उन्हें किसी से कुछ लेना-देना है ही नहीं, ऐसे पुरुष का स्याद्वाद।

किसी के प्रमाण को ठेस न लगे वह स्याद्वाद

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद अर्थात् क्या?

दादाश्री : स्याद्वाद अर्थात् किसी के प्रमाण को ठेस न लगे। अभी यहाँ पर अस्सी साल के चाचा हों उनसे कहें कि, 'जल्दी चलो न, कैसे मूर्ख इंसान हो!' तो उनके प्रमाण को ठेस लगी, ऐसा कहा जाएगा। और बीस साल का जवान धीरे-धीरे चल रहा हो और उसे कहें कि 'जल्दी मत चलो' तो वह भी गुनाह कहा जाएगा। अत: किसी भी प्रकार से प्रमाण को ठेस नहीं लगनी चाहिए। उसे स्याद्वाद कहते हैं।

यदि दो साल का बच्चा कपड़े पहने बगैर घूमता हो और उसे हम डाँटे कि 'कपड़े पहनो' तो उसके प्रमाण को ठेस पहुँचाया। क्योंकि उसे कपड़े पहने बगैर घूमने की छूट है। और यदि कोई चालीस साल का व्यक्ति कपड़े पहने बगैर घूमे तो?

प्रश्नकर्ता : आपत्ति उठाएँगे।

दादाश्री : ऐसा पद्धति वाला होता है न, सब? यदि छोटा बच्चा नंगा घूमे तो वह उसका धर्म है इसलिए कोई आपत्ति नहीं उठाता। अत: धर्म अलग-अलग होने चाहिए। बच्चे का धर्म, युवा का धर्म, फिर उससे आगे चालीस साल की उम्र वालों का धर्म, साठ साल वालों का धर्म, सत्तर साल वालों का धर्म, नब्बे साल वालों का धर्म, सभी के अलग-अलग प्रकार के धर्म होते हैं लेकिन किसी भी धर्म के प्रमाण को ठेस नहीं लगनी चाहिए।

जो हर एक दृष्टि बिंदु को स्वीकार करे, वह स्याद्वाद

अत: यह जो धर्म हैं न, वे हर एक व्यक्ति के लिए अलग-अलग हैं। जितने दृष्टि बिंदु हैं उतने धर्म हैं। फिर ये सभी मिलकर एक धर्म की आराधना करते हैं लेकिन फिर भी दृष्टि बिंदु सभी के अलग-अलग ही होते हैं। किसी के भी दृष्टि बिंदु को ठेस न लगे उसे स्याद्वाद कहते हैं।

हर एक का (अपना) दृष्टि बिंदु है। किसी का गलत है ही नहीं, हर कोई खुद की दृष्टि से सही है।

दिन-दहाड़े यहाँ से पाँच सौ फुट दूर फर्स्ट क्लास सफेद घोड़े को खड़ा रखा हो। और बारी-बारी से एक-एक व्यक्ति को बुलाकर पूछें, कि 'भाई, वह क्या दिखाई दे रहा है?' तब वह कहता है कि 'रुको, मुझे चश्मा लगाने दो।' तब मैं कहूँ 'चश्मा पहनकर बता।' तब वह कहता है, 'वह जो दिखाई दे रहा है, वह तो बैल जैसा दिखाई दे रहा है। दूसरा व्यक्ति कहता है, गधे जैसा। तीसरा कुछ और ही कहता है, जबकि है तो वह सफेद घोड़ा। तब यदि हम उसे डाँटें कि 'मेरे घोड़े को बैल क्यों कह रहा है?' तो वह किसकी भूल?

प्रश्नकर्ता : अपनी ही भूल है न!

दादाश्री : हाँ, अपनी ही भूल है। उस बेचारे को दिखाई नहीं देता तो वह क्या करे? और यदि उसे दिखाई देता तो वह ऐसा कहता ही नहीं न! दिखाई नहीं देता तो उसमें उसका क्या दोष बेचारे का?

स्याद्वाद यानी क्या? किसी के भी दृष्टि बिंदु को ठेस न पहुँचाए, उसे आहत न करे कि, 'तू गलत है, ऐसा है, वैसा है' और सभी के व्यू पोइन्ट को स्वीकार करे। हम प्रत्येक के दृष्टि बिंदु को एक्सेप्ट करते हैं। क्योंकि उसके दृष्टि बिंदु के अनुसार वह सही ही होता है। कम-ज़्यादा, कुछ अंशों तक सही होता ही है। उसे नकार दें तो, गुनाह कहा जाएगा। एकदम गलत तो किसी का होता ही नहीं न! अत: जो हर एक के दृष्टि बिंदु को स्वीकार करे, वह स्याद्वाद।

जो सभी के विचारों को सुने वह स्याद्वाद

प्रश्नकर्ता : आप ऐसा कहते हैं कि, 'हम इसे एक्सेप्ट करें, इसे एक्सेप्ट करें, इसे एक्सेप्ट करें' लेकिन इस 'एक्सेप्ट' का अर्थ क्या है?

दादाश्री : 'एक्सेप्ट' का अर्थ ऐसा है कि हम एक, दो, तीन, चार सभी को समान नहीं कहते। और सैंतालीस के बाद अठानवे नहीं बोला जा सकता। अत: हम सैंतालीस को एक्सेप्ट करते

हैं, अड़तालीस को एक्सेप्ट करते हैं, सभी को एक्सेप्ट करते हैं। क्योंकि वह तो, एक के आधार पर दूसरा रहा है न?

स्याद्वाद को तो लोग समझते ही नहीं। स्याद्वाद तो चीज़ ही अलग है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर यदि वे जानना चाहें तो फैक्ट बताना ही पड़ेगा न?

दादाश्री : हाँ, यदि वे जानना चाहें तो बता सकते हैं। हकीकत जानना चाहें तो बतानी ही पड़ेगी।

प्रश्नकर्ता : यानी कि स्पष्टता तो करनी ही पड़ेगी न?

दादाश्री : हाँ करनी ही पड़ेगी न! यदि स्पष्टता नहीं करेंगे तो चलेगा ही नहीं न! ऐसा है न, इंसान एकांतिक ही है। खुद के (अपने) ही विचार सही लगते हैं और बाकी सब के विचारों को वह एक्सेप्ट नहीं करता। जबकि स्याद्वाद यानी क्या है कि 'किसी के भी विचार को ज़रा सी भी ठेस न पहुँचाए।

स्याद्वाद क्या कहता है? खुद का जो भी पद हो उसे भूलकर सामने वाले की बात को सुनना।

स्याद्वाद तो सभी के विचारों को सुनता है। यदि चोर चोरी करके आया हो तब भी उसकी बात सुनता है। वहाँ यदि वह घृणा करे तो वह स्याद्वाद नहीं है। आप यदि किसी चोर को अकेले में पूछो, तब वह कहेगा कि 'भाई, मैं अपने धर्म का पालन कर रहा हूँ, उसमें आप किसलिए दखल कर रहे हो? यह मेरा व्यापार है।' चोर ऐसा कह सकता है न, कि 'यह मेरा व्यापार है, कह सकता है या नहीं?'

प्रश्नकर्ता : कह सकता है।

दादाश्री : और उससे हम पूछें कि 'अरे, क्यों करता है?' तब वह कहेगा, 'मुझे भगवान प्रेरणा देते हैं।' अब उसका क्या करना चाहिए? उसका कहना मानना चाहिए या नहीं?

और चोरी (करने वाले) की ज़रूरत है या दान देने वाले की ज़रूरत है? ज़रूरत किसकी है?

प्रश्नकर्ता : दोनों की।

दादाश्री : चोर की ज़रूरत किस प्रकार से है और दानेश्वरी की ज़रूरत किस प्रकार से है?

ये सभी जो अच्छे गुण हैं न, वे यहाँ जैसे नल में से पानी आता है न, उसके जैसे हैं। ये अच्छे गुण नल में से आते पानी के समान है और दुर्गुण गटर में जाते पानी के समान है। अब यदि गटर न हो तो शहर की स्थिति कैसी होगी?

प्रश्नकर्ता : गंदगी हो जाएगी।

दादाश्री : सभी रोग से मर जाएँगे। इसलिए गटर तो सब से पहले होना चाहिए, उसके बाद पानी का नल लाना चाहिए। तो जब तक ये चोर, लुच्चे, बदमाश नहीं होंगे तब तक संसार सुंदर नहीं दिखाई देगा, ये लोग ही संसार को लेवल में रखते हैं और गंदगी नहीं होने देते। अब यदि गटर को खोलकर सूंघा जाए तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : बदबू मारेगा।

दादाश्री : तो वह गटर ऐसा नहीं कहता कि 'आप खोलकर सूंघो।' फिर आप चोर को, उन लोगों को सूंघने जाओ तो क्या होगा? अत: आपको ऐसा समझ लेना है कि वे गटर हैं। और उनकी ज़रूरत है। तब फिर उन पर द्वेष नहीं रहेगा। और ये जो दान देते हैं, तब वे 'पानी

आता है, वैसे हैं। उनमें भी 'होल' (छिद्र) नहीं करना चाहिए, उनकी भी ज़रूरत है।

स्याद्वाद हर व्यू पोइन्ट को दृष्टि में रखता है

प्रश्नकर्ता : दादा, स्याद्वाद को और विस्तारपूर्वक समझाइए।

दादाश्री : स्याद्वाद अर्थात् क्या? किसी भी धर्म के प्रमाण को किंचित्मात्र ठेस न लगे। ऐसी वाणी बोलना, उसे स्याद्वाद कहते हैं। किसी भी धर्म के प्रमाण को किंचित्मात्र भी ठेस न लगे, ऐसी वाणी बोले, उसे कहते हैं स्याद्वाद। हर एक व्यू पोइन्ट को दृष्टि में रखे। एक से लेकर तीन सौ साठ डिग्री तक के जो व्यू पोइन्टस हैं न, उन सभी व्यू पोइन्टस को दृष्टि में रखे।

प्रश्नकर्ता : किसी भी धर्म के प्रमाण को किंचित्मात्र भी ठेस न लगे, यानी कैसे?

दादाश्री : हाँ, अभी यदि कोई मुस्लिम हो न, यदि मुस्लिम के प्रमाण ठेस लगी हो तो मेरी वाणी स्याद्वाद नहीं रही। या तो कोई स्थानकवासी, दिगंबरी हो, उसके अहम् को ठेस लगी हो तो वह स्याद्वाद नहीं कहा जाएगा। किसी भी धर्म के प्रमाण को ठेस नहीं लगनी चाहिए। और उसे सीधी काम आए, ऐसी ही वाणी होनी चाहिए। अत: हमारी वाणी स्याद्वाद होती है इसलिए हर एक व्यक्ति को अनुकूल आती है। वह चाहे किसी भी धर्म का पालन करता हो फिर भी अनुकूल आती है, स्याद्वाद वाणी। भगवान की वाणी संपूर्ण रूप से स्याद्वाद थी। हमारी स्याद्वाद वाणी कुछ अंशों तक अधूरी है। फिर भी उसके प्रमाण को ठेस नहीं लगती। एक्ज़ेक्ट उन्हें सेट हो जाए ऐसी होती है।

यहाँ पर हमारा ऐसा कोई विरोध नहीं है कि आपने ऐसा क्यों किया? किसी के साथ कम्पैर, कॉन्ट्रास्ट की जा सके, ऐसी चीज़ नहीं है यह। और यदि कम्पैर, कॉन्ट्रास्ट करने जाए तो मुश्किल में पड़ जाएगा वह व्यक्ति।

यह विज्ञान तो स्याद्वाद विज्ञान है। स्याद्वाद यानी चाहे कोई भी इंसान हो, मुस्लिम हो, हिन्दू हो उसे भी यह बात समझ में आ जाती है। चोर, बदमाश, डाकू कोई भी हो, उसे यह बात समझ में आ जाती है। क्योंकि आत्मा होना चाहिए, देहधारी होना चाहिए और मनुष्य रूपी होना चाहिए। यहाँ के वातावरण का असर कितना अच्छा होता है! उसे कोई छोड़ेगा क्या? यह वातावरण कुछ अलग ही प्रकार का होता है!

स्याद्वाद यानी यहाँ पर यदि सभी धर्म वाले बैठे हों और मैं कुछ कहूँ तो किसी को ऐसा नहीं लगेगा कि 'ये दादा किसी धर्म के प्रति पक्षपाती हैं,' निष्पपक्षपाती ही हैं। अत: ज्ञानी की वाणी स्याद्वाद होती है। अहंकार के चले जाने के बाद ऐसा होता है।

स्याद्वाद मतलब किसी से ज़रा भी मतभेद नहीं। आपका भी करेक्ट है, इनका भी करेक्ट है, उसका भी करेक्ट है और किस दृष्टि से करेक्ट है फिर उसे भी जानें, तभी स्याद्वाद! वर्ना, लोग तो कहते ही हैं न, कि 'इन सभी का सही है।' यह नहीं चलेगा। वैसा भी नहीं चलेगा। किस दृष्टि से सही है और किस दृष्टि से ठीक है, किस दृष्टि से वे लोग ठीक हैं, ऐसा सब जानना स्याद्वाद है!

कषाय हावी नहीं हों, वह है स्याद्वाद

यह अक्रम विज्ञान है! यह अलग ही प्रकार का विज्ञान है! यह तो साइन्टिफिक विज्ञान है! साइन्टिफिक यानी सैद्धांतिक अर्थात् सभी लोगों को मान्य करना होगा। फ़ॉरेन वालों को, यहाँ वालों को, सभी को। अभी उन्हें एक-एक शब्द को स्वीकार करना पड़ता है न! क्योंकि यह तो

विज्ञान है। जबकि अन्य कहीं तो एक ही मार्ग वाला दूसरे मार्ग वाले को कुछ कहे तो कषाय हावी हों जाते हैं? क्या हावी हो जाता है?

प्रश्नकर्ता : औरों को कषाय हो जाते हैं?

दादाश्री : जबकि यह (अक्रम) तो सभी मार्ग वालों को बताएँ तब भी कोई हर्ज नहीं। कषाय हावी नहीं होते और यह तो स्याद्वाद कहा जाता है। अभी यहाँ पर किसी भी धर्म वाले आएँ न, तो भी हर्ज नहीं है न!

यदि स्याद्वाद हो तो, उसमें किसी को दिक्कत नहीं होती और यदि एकांतिक है तो दूसरों को दिक्कत हो सकती है। इतना तो आपको समझ में आता ही है न?

अत: जो आपको ठीक लगे वह करो। या फिर यहीं की दवाई पीयो। या फिर आप वहाँ की पीते रहो, यदि वह आपको माफिक आ गई हो तो! और मानो कि शायद वहाँ माफक न आए, वैसा हो और ऐसा पूछो कि मुझे क्या करना चाहिए? तो फिर कहेंगे कि 'यहाँ आना'। यहाँ दिक्कत नहीं होगी। आप कहीं भी जाकर यहाँ आओगे तो हर्ज नहीं है। यहाँ पर तो जब आओ तब एडमिट, सभी को। यहाँ पर पिछला कुछ भी नहीं देखा जाता। आप जो भी करते हों, वहाँ हमें तो किसी भी तरह से हल लाना है न? अपना यह कोई धर्म थोड़ी ही है? ऐसी कोई स्थापना नहीं है, न ही खंडन या मंडन है। अत: आप जो कुछ भी करते हो, वह करते रहो और यदि वहाँ आपको ठीक नहीं लगे तो यहाँ आना, यह घर आपका है। लेकिन यदि क्रोध-मान-माया-लोभ खत्म हो जाएँ तब समझना कि अपना हल हो गया है। अत: यों उलझते रहने के बजाय उसका रास्ता समझना पड़ेगा। दो मार्ग एट-ए-टाइम तो नहीं हो सकते न।

बुद्धि के जवाब, जन्म देते है विवाद को

प्रश्नकर्ता : हर एक का अपना 'मैं' पद होता है, 'मैं जो कहता हूँ' वही सही है', ऐसा होता है न?

दादाश्री : और फिर विखवाद होता है।

प्रश्नकर्ता : इसलिए लोग भ्रांति में पड़ गए हैं कि इनमें से सही क्या है?

दादाश्री : सही कहाँ पर होता है? जहाँ वाद-विवाद नहीं होते वहाँ सही होता है। जहाँ वाद-विवाद हों वहाँ तो वह कौवों की लड़ाई जैसा कुसंग कहा जाएगा। जहाँ सत्संग हो लेकिन वहाँ यदि पूछने करने में वाद-विवाद होते हों तो समझ जाना कि यहाँ कोई लाभ नहीं हो सकता।

यह (सत्संग) संवादी नहीं है, यहाँ वाद-विवाद नहीं होते। बुद्धि का सारा भाग वाद-विवाद कहलाता है। वाद-विवाद मतलब वह बोले उस पर वापस मैं विवाद करूँ। फिर विवाद चलता है, चर्चा चलती है। यदि एक ही प्रश्न का जवाब यदि बुद्धि से दिया जाए तो चर्चा चलेगी।

प्रश्नकर्ता : यदि बुद्धि से जवाब दिया जाए तो विवाद होगा ही।

दादाश्री : सामने वाले की बुद्धि खड़ी हो जाएगी। 'तूने यह तलवार उठाई तो मैं भी तलवार उठाऊँगा।' मैं बुद्धि से जवाब नहीं देता न, इसलिए फिर चुप! यदि बुद्धि से नहीं बोला जाए तो इसमें हेल्पिंग होगा। मूल रास्ते की तरफ जाने में हेल्पिंग होगा।

बुद्धि वाद-विवाद वाली होती है। आप यदि बुद्धि की बात कहोगे तो सामने वाला वाद करेगा कि 'जा, ऐसा नहीं है, ऐसा है।' जबकि इस ज्ञान की बात में वाद नहीं करेगा।

आत्मा को ही एक्ज़ेक्ट कबूल करना चाहिए। तब कहेंगे, 'बाहर (क्रमिक में) तो आत्मा ही कबूल करता है न?' नहीं। वह तो मन कबूल करता है। वहाँ पर तो, आत्मा कबूल ही नहीं करता, आत्मा जाग्रत ही नहीं होता। आत्मा ज्ञानी की उपस्थिति में ही जाग्रत होता है। वर्ना होता ही नहीं। हम ज्ञान में देखकर बोलते हैं, निर्विकल्प दशा में, निर्विचार दशा में रहकर।

यहाँ पर तो यदि एक लाख लोग बैठे हों न, तो उन सब को स्वीकार करना पड़ेगा, यह बात को। फिर यदि किसी को जान-बूझकर उल्टा बोलना हो तो, मुझसे कहेगा कि, 'मेरा आत्मा कबूल नहीं करता।' तब मैं कहूँगा कि, 'मुझसे भूल हो गई। जो तुझसे बात की, वही मुझसे भूल हो गई।' क्यों कहूँगा मैं ऐसा? उसका आत्मा कबूल करे फिर भी ऐसा उल्टा बोले, ऐसे उल्टा बोलने वाले हैं न अंदर? ऐसे होते हैं न, कि फिर उल्टा बोलते हैं?

यदि हमारे वाद पर विवाद होगा, सामने वाला व्यक्ति विवाद करना चाहेगा तो वह मार खाएगा। मैं नहीं मारूँगा, उसके कर्म ही उसे मार खिलाएँगे।

प्रश्नकर्ता : तो ये सारे वाद-विवाद कहाँ से आए, यदि (सब) ऑटोमैटिक हुआ है तो?

दादाश्री : वाद-विवाद तो इगोइज़म के हैं। दो इगोइज़म लड़ते हैं उसे कहते हैं वाद-विवाद।

जब तक खुलासा न हो जाए तब तक वाद-विवाद चलता ही रहता है। इसीको संसार कहते हैं। और यदि पज़ल को सॉल्व करना आ गया तो शांति!

आवरण भेदक वाणी

देखो न, यहाँ पर अनजाने लोग हों फिर भी वे यहाँ विवाद नहीं करते। क्योंकि यहाँ सत्य ही होता है, एक्ज़ेक्ट होता है। चाहे कोई भी अनजान व्यक्ति हो फिर भी कहता है कि, 'करेक्ट है'। फिर उसे स्वीकार करना हो या नहीं, वह उसकी मर्ज़ी की बात है। करना हो या नहीं, उसकी प्रकृति जैसा कहती है वैसा करता है।

यह वाणी तो, तुरंत आवरण भेदकर आत्मा तक पहुँचा देती है। यह वाणी आवरण भेदक कहलाती है। यह तुरंत ही सीधे पहुँचा देती है और तुरंत कबूल कर देता है। विवाद नहीं करता जबकि उसमें तो वाद-विवाद और तूफान! जहाँ वाद-विवाद होते हैं वहाँ धर्म नहीं होता। उसे तो माथापच्ची कहा जाएगा। उसे कौवों की सभा कहा जाएगा, परमहंस की सभा होनी चाहिए। जिसमें चोंच डुबोते ही दूध इस तरफ और पानी उस तरफ। दोनों का भेद पता चल जाता है।

आत्मा-परमात्मा की बातें, वह तो परमहंसों का ही काम है। यहाँ और कुछ नहीं होता। सिर्फ आत्मा-परमात्मा की ही बातें निकलती हैं। ऐसा कहीं भी नहीं होता। जहाँ पर सिर्फ आत्मा-परमात्मा की ही बातें होती हैं, वहाँ पर देवगण भी पधारते हैं।

बाकी सभी हंस की सभा कही जाती हैं, परमहंस की नहीं। यानी कि बुरे में से छुड़वाते हैं और 'अच्छा करो, दान दो, फलाना करो, यों करो, क्षमा करो, दया रखो, शांति रखो', ऐसा सब रखने के लिए कहते रहते हैं। वह सब किसलिए रखना है? शुभ के लिए। वे सभी हंस की सभा कहलाती हैं। वहाँ कहीं भी आत्मा की बातें नहीं होती। आत्मा प्राप्ति के साधन की ही बातें होती है। वह आत्मा प्राप्ति के साधनों का मार्ग होता है जबकि यह साध्य मार्ग है। जहाँ पर आत्मा-परमात्मा की बातें होती हैं।

फिर हंस की सभा से भी निम्नकोटि का जो संग होता है, वह कौवों का सत्संग कहलाता है। ज़रा-सा कुछ हुआ तो काँव-काँव करने लगते हैं। सत्संग में ऐसा होता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : होता है।

दादाश्री : एक ऐसा कहे तो दूसरा वैसा कहता है।

ऐसे तीन प्रकार के बड़े सत्संग होते हैं। बाकी के छोटे-छोटे सत्संग तो बहुत सारे हैं। कौवों का सत्संग भी बड़ा कहलाता है।

वाद पर विवाद नहीं, वही सिद्धांत

प्रश्नकर्ता : वाद-विवाद करे तो 'सही क्या है' वह जानने को मिलता है न, वर्ना मैं अपनी होशियारी लगाता रहूँगा।

दादाश्री : लेकिन वह होशियारी किसी काम की नहीं।

अब यहाँ भी यदि बीच में खुद की होशियारी छोड़ दे तो, ज्ञानी जो कहते हैं वे बातें सही ही होती हैं क्योंकि ज्ञानी तो निर्विवाद होते हैं। हमारे साथ किसी ने विवाद किया ही नहीं। यह तो, ज्ञानी का शब्द एकदम सही ही होता है। लेकिन यदि खुद की जो पकड़ है न, और खुद की जो मान्यताएँ हैं, वे एक बार तो समझने ही नहीं देतीं।

प्रश्नकर्ता : मैं यहाँ पर वाद-विवाद करने नहीं आया, मैं तो समझने आया हूँ।

दादाश्री : यहाँ विवाद होता ही नहीं है। मेरे साथ किसी ने विवाद किया ही नहीं है। क्योंकि विवाद कहाँ पर होता है कि जहाँ पर बुद्धि होती है। मुझ में बिल्कुल भी बुद्धि नहीं है फिर आप मेरे साथ विवाद कैसे कर सकते हो? मुझ में एक सेन्ट भी बुद्धि नहीं है और मैं हारकर बैठा हुआ हूँ। यहाँ पर कोई वाद-विवाद करने नहीं आता। कुदरत ऐसे लोगों को यहाँ पर भेजती ही नहीं क्योंकि यह तो, वाद-विवाद करने की जगह है ही नहीं। ज्ञानी पुरुष का वाक्य त्रिकाल सत्य कहा जाता है, एक-एक वाक्य! वे शब्द त्रिकाल सत्य ही होते हैं! यह जितना भी ज्ञान हमने बताया न, वे सभी बातें त्रिकाली सत्य थीं। अत: यह अलौकिक चीज़ है! जिसे इन्टरेस्ट हो, वह यदि लाभ उठाए तो, उसे बहुत फायदा हो जाएगा। बाकी, सारा संसार लौकिक में ही पड़ा हुआ है और ये सारी बातें अलौकिक हैं, विवाद रहित हैं।

यहाँ पर जो बातें सुनता है उसे मेल बैठ ही जाता है। बाकी सभी जगह संवादी-विवादी कहा जाता है। वहाँ विवाद करने पड़ते हैं। फिर प्रतिवादी, वे यहाँ पर नहीं होते और बातें अविरोधाभासी होती हैं। अत: उन्हें मेल बैठना ही चाहिए। जो बातें पंद्रह साल पहले की हुई हों, आज की बातें भी उससे मेल खाती हैं, शब्दों के स्वरूप भले ही अलग हों लेकिन बातें मिलती-जुलती होती हैं। सिद्धांत एक ही होता है। सिद्धांत उसे कहते हैं कि जिस वाद पर विवाद न हों, विरोधाभास न हो और जो त्रिकाल सत्य हों। यदि विरोधाभास होता न, तो भविष्य में उसे कैन्सल करना पड़ता।

यहाँ पर तो, मैंने अठाईस सालों से जो कहा है वह सब इस टेप में आ गया है। इसमें से एक भी शब्द कोई काट नहीं सकता। एक भी शब्द को नहीं काट सकता। ये तो नए शास्त्र रूपी कहे जाएँगे।

एक लाख शब्द बोले गए हों तो उन्हें वाद कहते हैं। उस वाद पर यदि विवाद नहीं होता

तो, समझना कि यह ज्ञान करेक्ट है। यदि वाद पर विवाद हुआ तो उसे ज्ञान कहेंगे ही कैसे?

ऐसा है न, बुद्धिशाली तो वाद-विवाद करते हैं। यह बुद्धि वाली वाणी नहीं है। जिनकी बुद्धि खत्म हो चुकी है, वैसी वाणी है, निर्विवादी वाणी कही जाती है। जहाँ संवाद नहीं है, विवाद नहीं है। अभी अपने यहाँ पचास हज़ार लोग आते हैं लेकिन अपने यहाँ विवाद जैसा शब्द नहीं देखा। अंतिम कक्षा है, इससे आगे और कुछ जानने को बाकी नहीं रहता है।

यह स्याद्वाद मार्ग है! जहाँ स्याद्वाद होता है वहाँ वाद नहीं होता, विवाद नहीं होता, और प्रतिवाद भी नहीं होता। वाद-विवाद करने वाले को आत्मा नहीं मिलता।

चोर साहूकार, स्याद्वाद की दृष्टि से

प्रश्नकर्ता : तो स्याद्वाद यानी कैसा वाद, वह समझाइए।

दादाश्री : स्याद्वाद मतलब हर एक कोने को, हर एक धर्म को ध्यान में रखकर बातचीत करना। यानी कि तीन सौ साठ डिग्री में जितने भी धर्म हैं उनमें से किसी को भी परेशानी न हो, किसी को दुःख न हो, इस तरह से बातचीत करना। एकांतिक नहीं होना चाहिए। कोई आग्रह पकड़कर नहीं बैठना है। और किसी के भी सत्य के प्रमाण को ठेस लगे, उस तरह से वाणी बोलने को स्याद्वाद वाणी कहते हैं। क्योंकि हर एक का सत्य अलग-अलग होता है। लेकिन हम ऐसा बोलते हैं कि हर एक के सत्य को फिट हो जाता है और उसे दुःख नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : दो लोगों का सत्य अलग-अलग होता है और यदि हम एक के सत्य का प्रमाण संभालने जाएँ तो दूसरे का प्रमाण नहीं संभाल पाते तो?

दादाश्री : अब, सत्य अलग-अलग नहीं होता। सत्य तो उनकी मान्यता के अनुसार होता है। सत्य तो एक ही प्रकार का होता है। लेकिन उसकी जो दूसरी मान्यता है न, वह अलग होती है। दूसरी मान्यता साथ में होती ही है लेकिन उसे ज़रा भी ठेस नहीं लगनी चाहिए। उसके माने हुए सत्य को ठेस नहीं पहुँचनी चाहिए। अतः किसी का सत्य के प्रमाण को ठेस नहीं लगनी चाहिए।

अब भगवान तो, चोरी करने वाले और दान देने वाले दोनों को अहंकारी कहते हैं। क्योंकि जिसने चोरी की वह उसका फल भुगतेगा और जिसने दान दिया वह उसका फल भोगेगा। लेकिन वाणी ऐसी बोलो ताकि चोर या साहूकार, यदि दोनों सुनें न, तो दोनों की 'हेल्प' करे। अर्थात् चोर के सत्य की हेल्प करे और साहूकार के सत्य की भी हेल्प करे, ऐसा बोलो। यदि किसी एक के पक्ष में पड़ोगे तो दूसरे के परिणाम बदल जाएँगे। यदि चोर के पक्ष में पड़ोगे तो साहूकार का परिणाम बदल जाएगा। किसी का भी परिणाम न बदले इस तरह से बोलो। वास्तव में, उसे वीतराग वाणी कहते हैं। तीन सौ साठ डिग्री वालों को नुकसान न पहुँचे, इस तरह से बोलो। सभी अंश (डिग्री) वालों को हेल्प हो जाए, ऐसा बोलो।

प्रश्नकर्ता : यानी एक साहूकार हो और दूसरा चोर हो तब दोनों को हेल्प हो ऐसी वाणी बोलनी हो तो उसका कोई उदाहरण दीजिए न!

दादाश्री : मैं जहाँ भी जाता हूँ न, वहाँ सभी प्रकार के लोग आते हैं लेकिन किसी के प्रमाण को ठेस न लगे, ऐसी वाणी होती है। ज़िंदगी भर मैंने ऐसा ही बोला है। वर्ना, ऐसा एक ही प्रश्न पूछने पर क्या हो जाता? यदि कहीं

पर ऐसे प्रश्न पूछे जाएँ तब तो एक दिन भी व्यापार नहीं चल सकता! जबकि हमारे यहाँ तो, बीस सालों से यही व्यापार है! वर्ना, एक दिन भी यह व्यापार नहीं चलता और एक ही दिन में दुकान बंद कर देनी पड़ती। यह तो पक्ष-अपक्ष रहित वाणी, सत्य-असत्य रहित वाणी, सत्य भी नहीं और असत्य भी नहीं क्योंकि दोनों ही गलत हैं, सत्य और असत्य दोनों ही गलत हैं।

प्रश्नकर्ता : तो साहूकार से क्या कहना चाहिए और चोर से क्या कहना चाहिए?

दादाश्री : यह साहूकार है और यह चोर है ऐसी दृष्टि ही नहीं होनी चाहिए अपनी। यह तो, ऐसी दृष्टि की वजह से वाणी बिगड़ जाती है। वह चोर अपना व्यापार लेकर बैठा है और यह अपना व्यापार लेकर बैठा है। सभी अपने-अपने व्यापार लेकर बैठे हैं, उससे हमें क्या? भगवान की दृष्टि नहीं बिगड़ती तो हम क्यों दृष्टि बिगाड़ें? भगवान की दृष्टि नहीं बिगड़ती कि, 'यह चोर है या यह साहूकार है।' भगवान की समदृष्टि है!

स्याद्वाद उसे कहते हैं कि किसी भी धर्म के प्रमाण को ठेस न लगे। भले ही पाँच अंश वाला हो उसके प्रमाण को भी ठेस नहीं लगनी चाहिए। स्याद्वाद उसे कहते हैं कि वह किसी भी धर्म की डाइरेक्ट भूल न दिखाए वर्ना वह ठेस पहुँचाने के समान है। भ्रांत व्यक्ति को यदि डाइरेक्ट भूल दिखाई जाए तो फिर क्या होगा? भगवान का स्याद्वाद यानी किसी को किंचित्मात्र दुःख न हो, फिर चाहे वह किसी भी धर्म का हो।

किसी के मन को दुःख न हो ऐसी वाणी बोलनी चाहिए। यह बात बहुत गंभीर है! और जब राग-द्वेष खत्म हो जाएँ तभी ऐसी बातें निकलती हैं।

स्याद्वाद वाणी-वर्तन-मनन...

प्रश्नकर्ता : अब 'किसी के भी अहम् को ठेस न लगे ऐसी स्याद्वाद वाणी, स्याद्वाद वर्तन और स्याद्वाद मनन करने की शक्ति दीजिए।' इन तीनों को ज़रा समझाइए।

दादाश्री : स्याद्वाद का अर्थ ऐसा है कि सभी किस भाव से, किस 'व्यू पोइन्ट्स' से कह रहे हैं उसे हमें समझना चाहिए। हमने खोज की है कि सारा संसार 'व्यू पोइन्ट्स' से देखता है। 'व्यू पोइन्ट' में शक्तियाँ व्यर्थ चली जाती है। 'व्यू पोइन्ट' में ज़िंदगी भर बैठे रहेंगे तो भी सामने वाले का 'व्यू पोइन्ट' बदला नहीं जा सकता।

प्रश्नकर्ता : सामने वाले का 'व्यू पोइन्ट' समझना वह स्याद्वाद कहलाता है?

दादाश्री : सामने वाले का 'व्यू पोइन्ट' समझकर उसके मुताबिक व्यवहार करना, उसे कहते हैं स्याद्वाद। उसके 'व्यू पोइन्ट' को दुःख नहीं पहुँचे ऐसा व्यवहार करना। चोर के 'व्यू पोइन्ट' को भी दुःख नहीं हो उस तरह आप बोलें, उसे कहते हैं स्याद्वाद!

हम जो बात करते हैं, वह मुस्लिम हो या पारसी हो, सभी को एक समान समझ में आती है। किसी के प्रमाण को ठेस नहीं लगती कि 'पारसी ऐसे हैं, स्थानकवासी ऐसे हैं।' ऐसा दुःख नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यहाँ पर कोई चोर बैठा हो, उसे हम कहें कि चोरी करना अच्छा नहीं है, तो उसके मन को ठेस तो लगेगी ही न?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं कहना है। आपको उसे ऐसा कहना चाहिए कि 'चोरी करने का फल ऐसा आता है। तुझे ठीक लगे तो करना।' ऐसा

कह सकते हैं। अर्थात् बात ढंग से करनी चाहिए। तब वह सुनने को तैयार होगा। वर्ना वह बात को सुनेगा ही नहीं बल्कि आपके शब्द व्यर्थ जाएँगे। आपका बोला हुआ व्यर्थ जाएगा और ऊपर से वह बैर बाँधेगा कि 'बड़े आए नसीहत देने वाले!' ऐसा नहीं होना चाहिए।

लोग कहते हैं कि चोरी करना गुनाह है। लेकिन चोर क्या समझता है कि चोरी करना मेरा धर्म है। हमारे पास कोई चोर को लेकर आए तो हम अकेले में उसके कंधे पर हाथ रखकर पूछेंगे कि 'भाई, यह बिज़नेस (धंधा) तुझे अच्छा लगता है? तुझे पसंद है?' फिर वह अपनी हक़ीकत बताएगा। हमारे पास उसे भय नहीं लगता। मनुष्य भय के कारण झूठ बोलता है। फिर उसे समझाएँ कि, 'यह जो तू करता है उसमें क्या जोखिम है? उसका फल क्या आता है, यह तुझे मालूम है?' 'वह चोरी करता है' ऐसा तो हमारे मन में भी नहीं होता और यदि ऐसा हमारे मन में होता तो उस पर उसका असर होता। हर कोई अपने-अपने धर्म में है। किसी के भी धर्म के प्रमाण को ठेस न लगे, उसे कहते हैं स्याद्वाद वाणी। स्याद्वाद वाणी संपूर्ण होती है। प्रत्येक की प्रकृति अलग-अलग होती है, फिर भी स्याद्वाद वाणी किसी की भी प्रकृति में दखल नहीं करती।

स्याद्वाद वर्तन किसे कहते हैं कि ऐसा वर्तन जो मनोहारी लगे और मन का हरण करे वैसा हो।

वर्तन ऐसा हो जो मन का हरण कर ले। यानी कि कुछ भी याद आना व मन के विचार बंद ही हो जाएँ। संसार के विचारों को ही बंद कर दे। इस प्रकार जिसका वर्तन मनोहर लगे, मन का हरण कर ले, वह स्याद्वाद वर्तन है।

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद मनन अर्थात् क्या?

दादाश्री : स्याद्वाद मनन अर्थात् विचारणा में, विचार करते समय भी किसी धर्म के प्रमाण को ठेस नहीं लगनी चाहिए। वर्तन में तो होना ही नहीं चाहिए लेकिन विचार में भी नहीं होना चाहिए। बाहर बोलते हो वह अलग लेकिन मन में भी ऐसे अच्छे विचार होने चाहिए कि सामने वाले के प्रमाण को ठेस नहीं लगे। क्योंकि मन में जो (बुरे) विचार आते हैं, वे सामने वाले तक पहुँचते हैं। इसीलिए तो इन लोगों के मुँह चढ़े हुए होते हैं। क्योंकि आपके विचार वहाँ पहुँचकर उन पर असर डालते हैं।

प्रश्नकर्ता : किसी के प्रति खराब विचार आएँ तो उसके लिए प्रतिक्रमण करना चाहिए?

दादाश्री : हाँ। वर्ना उसका मन बिगड़ेगा। और प्रतिक्रमण करने से उसका बिगड़ा हुआ मन सुधर जाएगा। किसी के लिए भी बुरा या ऐसा-वैसा नहीं सोचना चाहिए। ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए। 'सब सबकी सँभालो', अपना-अपना सँभालो, बस! और कोई झंझट नहीं।

सभी के दृष्टि बिंदु को समा लेता है स्याद्वाद

आपके घर में यदि एक ही तरह के लोग हों तो क्या होगा? घर में पत्नी, पति, बेटा, बेटी सभी व्यापारी हों तो फिर घर में क्या होगा? अत: अलग-अलग होना चाहिए तभी संसार चलेगा। हर एक की प्रकृति अलग होती है। अत: भगवान ने कहा था कि 'भाई, सभी की प्रकृति में अंतर होता है। लेकिन वह उसका दृष्टि बिंदु है और दृष्टि बिंदु के आधार पर ही वह चलता रहता है।'

अब, अपने खुद के दृष्टि बिंदु को सत्य ठहराना, उसे एकांतिक कहा जाएगा। जबकि वीतराग धर्म अनेकांत कहलाता है। जो सभी के

दृष्टि बिंदुओं को खुद में समा लेता है, उसे वीतराग धर्म कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : 'जो सभी के दृष्टि बिंदुओं को खुद में समा ले, उसे कहते हैं वीतराग धर्म,' तो इससे आप क्या कहना चाहते हैं?

दादाश्री : हाँ। तीन सौ साठ डिग्री हो तो वह सभी डिग्रियों को समा लेता है, किसी से मतभेद नहीं डालता, उसे वीतराग धर्म कहते हैं। तीन सौ साठ डिग्री वाले को, सेन्टर वाले को किसी से भेद होता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : सभी समान होते हैं न?

प्रश्नकर्ता : हाँ!

दादाश्री : इसे कहते हैं वीतराग धर्म! शुभ को 'एकांतिक' कहा जाता है, जबकि शुद्ध को 'अनेकांत' कहा जाता है। अनेकांत से मोक्ष है। अनेकांत यानी आग्रह नहीं, हर एक सत्य को स्वीकार करता है। वीतराग मार्ग अनेकांत व स्याद्वाद होता है।

जहाँ वीतराग धर्म, वहाँ स्याद्वाद व अनेकांत

भगवान अनेकांत थे। अनेकांत अर्थात् आग्रह नहीं। इस संदर्भ में यह भी सत्य है और उस संदर्भ में वह भी सत्य है। दोनों को स्वीकार करे, हर एक सत्य को स्वीकार करे। 'आपका यह गलत क्यों?' ऐसा कुछ नहीं। अत: संप्रदाय तो एकांतिक मार्ग कहलाता है जबकि वीतराग मार्ग में ऐसा है ही नहीं। वीतराग मार्ग तो अनेकांत व स्याद्वाद होता है।

जहाँ एकांतिक है वहाँ तरह-तरह के मत वाले पैदा हो जाते हैं। तरह-तरह के मत वाले ही नहीं लेकिन मतांध भी हो जाते हैं। व्यवहार में तो, संसार में तो लोभांध ही था कि किस तरह से पैसे एकत्र करूँ उसमें अंध हो चुका होता है। लेकिन ये तो मत में ही अंधे हो गए हैं। और खुद के मत को सत्य ठहराने के लिए सामने वाले की सत्य चीज़ को खत्म कर देते हैं, सत्य को नष्ट कर देते हैं। अत: जहाँ संप्रदाय है वहाँ वीतराग धर्म है ही नहीं। हम पूछें कि 'आप वीतराग धर्म में हो या संप्रदाय में हो?' तो वे कहेंगे, 'संप्रदाय में।' और संप्रदाय अर्थात् एकांतिक। और जहाँ एकांतिक हो, वहाँ मोक्षमार्ग रहेगा ही कहाँ से? संप्रदाय अर्थात् पक्ष। इसलिए उनकी वाणी भी पक्ष वाली है, आचार पक्ष वाले हैं और वर्तन भी पक्ष वाले हैं। जबकि भगवान निष्पक्षपाती होते हैं। वीतराग, स्याद्वाद होते हैं।

वीतराग यानी स्याद्वाद और अनेकांत, जहाँ सिर्फ ये दो शब्द हैं। वहाँ वीतराग है।

एकांतिक आग्रही, अनेकांत निराग्रही

प्रश्नकर्ता : यानी एक ही विचार दृष्टि को पकड़े रहना, वह एकांतिक है!

दादाश्री : हाँ, ठीक है। कितना अच्छा वाक्य! एक ही विचार को पकड़े रहना वही एकांतिक है। अत: कुछ डिग्रियों को एक्सेप्ट करना, दूसरी डिग्रियों को नहीं, वह एकांत दृष्टि है। और तीन सौ साठ डिग्रियों को एक्सेप्ट करना, वह अनेकांत दृष्टि है।

अभी यह बात करते हुए आपके और मेरे बीच में किसी प्रकार की खींचतानी है क्या?

प्रश्नकर्ता : ज़रा सी भी नहीं?

दादाश्री : एक ही बात पर सहमत हो गए हो न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : जो एकांतिक में सहमत नहीं होता वह अनेकांत में सहमत है, ऐसा कहा जाएगा। हम पूछें कि 'आपका हिसाब एकांतिक है या अनेकांत?' तब वह कहेगा, 'एकांतिक' और एकांतिक अर्थात् विकल्प। ऐसा है, जो चालीस डिग्री पर पहुँचा हो, उसे वह व्यू पोइन्ट चाहिए, जो अस्सी डिग्री पर पहुँचा हो, उसे अस्सी डिग्री वाला व्यू पोइन्ट चाहिए, और सौ डिग्री वाले को सौ डिग्री वाला व्यू पोइन्ट चाहिए। इस तरह से हर एक को अलग-अलग तो करना पड़ेगा न! वह दृष्टि बिंदु कहलाता है। एकांतिक का अर्थ क्या है? दृष्टि बिंदु। और अनेकांत यानी वास्तविक। अपने यहाँ सिर्फ, वास्तविक है, रियल है।

एकांतिक यानी क्या? उन लोगों से पूछें कि 'भाई, हर एक संप्रदायिक मार्ग को एकांतिक मार्ग कहा जाता है, तो क्या जवाब देंगे? एकांतिक। हम उनसे पूछें कि, 'आप एकांतिक क्यों लिखते हो? समझकर लिखते हो या बगैर समझे?' तब कहेंगे, 'नहीं समझकर लिखते हैं। हमने निश्चय किया है कि सिर्फ इतना ही, इतना ही आग्रह निश्चित किया है। यही आग्रह हमारा धर्म है,' ऐसा कहते हैं। हमने आग्रह निश्चित किया है। अत: एकांतिक अर्थात् आग्रही और अनेकांत यानी निराग्रही। तीर्थंकर भगवान के अलावा कहीं भी अनेकांत नहीं है। गणधर भी प्रथम स्टेज में अनेकांत नहीं हो सकते। वाणी दोषित ही निकलती है।

एकांतिक यानी निश्चित करना कि बस इतना ही, 'इतने नियम निश्चित किए। इतने नियमों के अनुसार ही हमें चलना है।' इसे कहते हैं एकांतिक और अनेकांत यानी दूसरों के नियमों को भी स्वीकार करना। बाकी सभी के नियमों को भी स्वीकार करना वह अनेकांत कहलाता है।

स्याद्वाद में किसी से मतभेद नहीं होता

कबीर साहब मुस्लिम मोहल्ले में मस्जिद के पास ही रहते थे। तो वे लोग अज़ान लगाते थे, वे लोग कान में उँगली डालकर चिल्लाते हैं या नहीं? उसे क्या कहा जाता है? अज़ान! अब उस अज़ान के लिए कबीर साहब, वे तो बहुत जाग्रत इंसान थे, उन्होंने ऐसा कहा, 'अल्लाह कोई बहरे थोड़े ही हैं, जो इतनी ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हो? वे सब सुनते हैं। वे तो अगर चींटी के पाँव में झांझर लगाई हो, तो उसे भी सुन लेते हैं। तो फिर आप क्यों इतना ज़ोर से चिल्लाते हो? हमारे कानों में बहुत खराब लगता है।' तब, 'हमारे भगवान की, हमारे धर्म की टीका करते हैं', ऐसा कहकर मुस्लिम लोगों ने कबीर साहब को बहुत मारा।

अब यदि कबीर साहब ने मुझसे पूछा होता कि, 'ये लोग तो गलत करते हैं फिर भी मुझे मारा।' तो मैं कहता कि 'ये लोग जो करते हैं वह ठीक है, भूल आपकी है।' सामने वाले के व्यू पोइन्ट को समझकर बोलो। सामने वाले का व्यू पोइन्ट समझे बिना बोलना और सब को खुद की दृष्टि से नापना भयंकर गुनाह है। खुद की दृष्टि से यानी मेरी जैसी दृष्टि है वैसी ही इनकी होगी, ऐसा मानना वह सब गुनाह कहा जाता है फिर कबीर साहब को मैं समझाता कि, 'ये लोग जितना ज़ोर से बोलेंगे उतना ही अंदर (का आवरण) पर्दा टूटेगा और तब अंदर वाले अल्लाह सुनेंगे। इनकी परतें, आवरण इतने मोटे होते हैं और आपकी जो परत है, वह कपड़े जैसी पतली है। अत: आप मन में बात करोगे, तब भी उन तक पहुँच जाएगी और उन लोगों के आवरण तो मोटे हैं, इसलिए जितना ज़ोर से चिल्लाकर बोला जा सके, उन्हें तो उतना बोलना ही चाहिए। यह

सब उनके लिए ठीक है, करेक्ट है। अब ऐसी अज़ान यदि क्राइस्ट के भक्त लगाएँ तो उनका बिगड़ जाएगा। उन्हें तो बिल्कुल शांति चाहिए। बोलना ही नहीं, शब्द ही नहीं। हर एक की भाषा में अलग-अलग है। यानी वे उनकी अपनी भाषा में बात करते हैं। और यदि उनसे हम कहें तो कबीर साहब जैसी दशा हो जाएगी। जो अनेकांत को नहीं समझते, वे कबीर साहब की तरह मार खाते हैं। खुद, खुद की भूलों की वजह से मार खाता है।

कबीर साहब बहुत जाग्रत इंसान थे। भक्त तो बहुत सारे हो गए लेकिन उनमें कबीर जी बहुत ही जाग्रत थे। ऐसे पाँच-सात भक्त हो चुके हैं जो बहुत जाग्रत थे, अत्यंत जाग्रत। उन्हें मात्र मोक्षमार्ग नहीं मिलने के कारण उनका काम रुका हुआ था। उन्हें मार्ग नहीं मिला था। उन्हें यदि मार्ग मिल गया होता तो, बहुत कुछ काम निकाल लेते, ऐसे थे वे!

एक बार कबीर साहब के समय में, गाँव में ब्राह्मण यज्ञ कर रहे थे। उन्होंने यज्ञ में बलि देने के लिए बड़ा बकरा लाकर खड़ा किया था। कबीर जी ने यह देखकर ब्राह्मणों से पूछा, 'आपने इस बकरे को यहाँ पर क्यों खड़ा किया है?' तब उन ब्राह्मणों ने कबीर जी से कहा, 'तू क्यों यहाँ आया है? चला जा यहाँ से। तुझे इससे क्या मतलब?' तब कबीर जी समझ गए और बोले, 'यह बकरा जीवित है, अच्छा है। आप इसकी बलि क्यों दे रहे हो? इसे कितना अधिक दुःख होगा?' तब ब्राह्मणों ने कहा, 'इसकी बलि देंगे तो इसे स्वर्ग मिलेगा।' तब कबीर जी फटाक से बोले, 'इस बकरे को क्यों स्वर्ग में भेज रहे हो? इसके बदले तो आपके पिता जी बूढ़े हो गए हैं, उनकी बलि दे दो न, ताकि उन्हें स्वर्ग मिले!' अब यह कैसा सिर चकरने वाला वाक्य है। तब ब्राह्मणों ने उन्हें बहुत मारा। इस तरह हर कहीं पर मार खाता है। जो भगवान का अनेकांत समझे बिना बोलता है, वह हर कहीं पर मार खाता है! बाकी, कबीर जी जैसे भगत तो कोई हुए ही नहीं! सब से उत्तम! उन्होंने जगत् की स्पृहा ही छोड़ दी थी। जगत् के किसी भी विषय की स्पृहा उन्हें थी ही नहीं, ऐसे निस्पृह हो गए थे।

अंग्रेज जो शांति से चर्च में खड़े रहते हैं, वह करेक्ट है। मुस्लिम अज़ान लगाते हैं, वह भी करेक्ट है और हिन्दू मन में, धीरे-धीरे बोलते हैं वह भी करेक्ट है। कोई हिन्दू यदि ज़रा जोर से बोल रहा हो या बिल्कुल ही नहीं बोल रहा हो, जड़ जैसा हो तो उससे कहना चाहिए कि, 'ज़रा जोर से बोल।' कोई जैन ज़रा जड़ जैसा हो तो उससे कहना चाहिए कि, 'अरे! नवकार मंत्र को यों मन में क्या बुदबुदा रहा है? जरा ज़ोर से बोल ताकि यहाँ पर सुनाई दे, भीतर घंट बजें ऐसा बोल।' यानी कि हर एक के लिए अलग-अलग दवाई होती है। मनुष्य मात्र के रोग अलग-अलग होते हैं, उनकी दवाइयाँ अलग-अलग होती हैं। जीव मात्र के रोग अलग-अलग होते हैं। अब आप यदि ऐसा कहो कि 'इन सभी को उल्टी बंद होने की दवाई दे दीजिए, दादा,' तो क्या होगा? तो ऐसा है यह जगत्! इसलिए भगवान ने अनेकांत दिया था, स्यादवाद, ताकि किसी जीव से मतभेद हो ही नहीं।

ज्ञानी, सभी मतों के जानकार

यह तो अनेकांत मार्ग है, इसे एकांतिक कर दिया है। आगे का समझ में नहीं आने की वजह से इसे एकांतिक कर दिया है और मत बना दिया है। एकांतिक यानी मत और अनेकांत यानी कोई

मत नहीं, निष्पक्षपात, अनेकांत! भगवान ने कहा है कि, 'ज्ञानी पुरुष, स्वमत व परमत के जानकार होने चाहिए।

खुद के स्व-मत वाले को प्रकाश देना, वह एकांतिक कहलाता है। अनेकांतिक बनना होगा। चाहे कोई भी अन्य मत वाला व्यक्ति आकर खुलासा माँगे तो तुरंत ही, उसे ऑन द मोमेन्ट खुलासा मिलना चाहिए। और वह खुलासा सफल होना चाहिए। ये तो, सिर्फ खुद के मत वालों को ही समझा सकते हैं। उसका कोई अर्थ ही नहीं है न! मिनिंगलेस है! जब दूसरे मत वाले आते हैं तब क्या होता है?

प्रश्नकर्ता : सभी को समाधान दे सकें ऐसा होना चाहिए।

दादाश्री : एक प्रखर वेदांती साहब आए थे। उनसे कोई जैन साधु इतना तो कहकर देखे कि 'नहीं, भगवान इसका कर्ता नहीं है।' देख लो, फिर साहब का रौब! वहाँ तो ऐसा ही बोलना पड़ेगा ताकि उसे अपनी बुद्धि से बात समझ में आ जाए। 'भगवान कर्ता नहीं हैं', इस बात का विरोध तो पूरी दुनिया में चल रहा है। महावीर भगवान के समय में भी ज़बरदस्त विरोध चला था। और इन (वेदांती) साहब को यहाँ पर ज़रा सा भी विरोध लगा क्या? किसी वैष्णव को भी यहाँ पर विरोध नहीं लगता। क्योंकि यह हमारा वैज्ञानिक तरीका है और हम तो बोलते ही नहीं न! यह तो टेपरिकॉर्ड बोलती है। वर्ना, परमत वाले एक भी इंसान में बदलाव नहीं होता। यदि सामने इंसान (बोल रहा) हो तो कोई दलीलबाज़ी करेगा परंतु सामने इंसान न हो और टेप हो तो दलील नहीं करेगा। इस टेप को सुनकर सोच में पड़ जाएगा। टेप के साथ कहाँ माथाच्ची करे!

भेद, अनेकांत और स्याद्वाद में

प्रश्नकर्ता : एकांतिक मार्ग से अंतिम मोक्षमार्ग, यह समझ में नहीं आता।

दादाश्री : एकांतिक को तो पूरा संसार समझता है लेकिन अनेकांत को नहीं समझता और जब स्याद्वाद को समझ जाएगा तब फिर मोक्षमार्ग हाथ में आएगा।

प्रश्नकर्ता : अनेकांत यानी स्याद्वाद ही हुआ न?

दादाश्री : अनेकांत स्याद्वाद में आ जाता है लेकिन अनेकांत में स्याद्वाद नहीं आता। स्याद्वाद, इतना बड़ा शब्द है कि जिसके भीतर अनेकांत भी आ जाता है, निष्पक्षपाती भी आ जाता है। निष्पक्षपाती दुनिया में हैं तो सही लेकिन वह स्याद्वाद नहीं कहलाता। निष्पक्षपाती विचारों वाले लोग होते तो हैं और क्योंकि उन विचारों वाले हैं इसलिए वैसा कहते भी हैं, फिर भी वह स्याद्वाद नहीं कहलाता।

प्रश्नकर्ता : तो तत्त्व दृष्टि से यह स्याद्वाद और अनेकांत, दोनों समान ही हैं न?

दादाश्री : नहीं, समान नहीं हैं। लोग इसे समान कहेंगे लेकिन मैं समान नहीं मानता न! क्योंकि अनेकांत का अर्थ क्या होता है? वह निराग्रही कहलाता है। हिन्दुस्तान में, धर्म के जितने भी मार्ग हैं वे सभी एकांतिक हैं। एकांतिक यानी किसी प्रकार का आग्रह निश्चित किया हो कि इतनी ही हमारी भूमिका और यही हमारी मान्यता तो वह एकांतिक है। खुद का अलग और सामने वाले का अलग। जबकि अनेकांत यानी आग्रह नहीं, निराग्रही वाणी। निराग्रह, वह स्याद्वाद में समा जाता है, स्याद्वाद, निराग्रह में नहीं समाता! स्याद्वाद एक बहुत बड़ी चीज़ है।

अनेकांत वह अलग चीज़ है और स्याद्वाद वह अलग चीज़ है। अनेकांत आग्रह पर आधारित है जबकि स्याद्वाद वाद पर चलता है। वाद यानी वचन।

भगवान के स्याद्वाद को इन लोगों ने एकांतिक कर दिया। भगवान का स्याद्वाद ऐसा नहीं था। भगवान का स्याद्वाद यानी क्या? इस धर्म में यहाँ तक की बातें समझाई जाती हैं और दूसरे धर्म में यहाँ तक की बातें समझाई जाती है। वे सभी धर्म अपनी-अपनी बाउन्ड्री में ही हैं, उनके व्यू पोइन्ट में ही हैं और फिर वे इससे अलग नहीं हैं। ये सभी एक ही कॉलेज के 'स्टैन्डर्ड' हैं। लेकिन फिर हर धर्म वाले ने, 'यह हमारा और वह आपका', कर दिया। 'यह हमारा और वह आपका' आया उसे स्याद्वाद नहीं कहा जाएगा।

आत्मा प्राप्त होने के बाद अनेकांत की शुरुआत होती है।

स्याद्वाद को निराग्रही कहना हो तो, निराग्रही कह सकते हैं। अनेकांत कहना हो तो, उसे अनेकांत भी कह सकते हैं। एकांतिक यानी आग्रही और अनेकांत अर्थात् निराग्रही। और वाणी ऐसी होती है जो सभी को अनुकूल आए। यहाँ पर सभी धर्म वाले बैठे हों न, तो उनमें से किसी को भी मेरे शब्दों में अंतर नहीं लगता। क्योंकि मैं निष्पक्षपाती विचार वाला हूँ और यह वाणी स्याद्वाद वाणी है। यह बाद में समझाऊँगा। स्याद्वाद वाणी बहुत बड़ी चीज़ है। अभी सिर्फ इतना ही, निराग्रही है, इतना ही समझ लेना।

प्रश्नकर्ता : अब, स्याद्वाद और अनेकांत, इन दोनों के अर्थ के रहस्य अलग-अलग हैं या एक ही है?

दादाश्री : रहस्य तो इतना ही है कि धर्म की किसी भी बात में झगड़ा हो तो उसे एकांतिक कहेंगे। जबकि अनेकांत में किसी से झगड़ा नहीं होता, कोई आग्रह नहीं होता न! कुछ भी तूफान नहीं होता। अनेकांत अर्थात् जीवन उपयोगमय होता है। शुद्ध उपयोगमय जीवन को अनेकांत कहते हैं। बाकी, व्यवहार में ऐसा होता नहीं है न! व्यवहार में तो, सभी जगह शुभाशुभ ही होता है। शुद्ध उपयोग यानी खुद अपने-आपको शुद्ध देखता है और दूसरों को भी शुद्ध देखता है। चोर को भी शुद्ध देखता है, साँप को भी शुद्ध देखता है और बाघ को भी शुद्ध देखता है, उसे शुद्ध उपयोग कहते हैं। वह साँप को साँप नहीं देखता, शुद्ध ही देखता है।

स्याद्वाद, अनेकांत और नयवाद

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद, अनेकांत वाद और नयवाद इन तीनों में तात्त्विक भेद क्या है? और किस प्रकार से हैं? स्याद्वाद और अनेकांत वाद में बहुत समानताएँ दिखाई देती है।

दादाश्री : इसमें स्याद्वाद और अनेकांत वाद ये दोनों 'रियल-रिलेटिव' है। यानी कि 'रिलेटिव' तो है, परंतु ये 'रियल-रिलेटिव' हैं और यह नयवाद 'रिलेटिव-रिलेटिव' है, यह विनाशी है। अर्थात् नयवाद तो विनाश होते-होते ही आगे बढ़ता है। और सब से अंत में यह स्याद्वाद की आवश्यकता है क्योंकि स्याद्वाद के बगैर मोक्ष नहीं हो सकता और यह स्याद्वाद 'रियल-रिलेटिव' है। अतः मुख्य रूप से इसकी ज़रूरत है।

स्याद्वाद अलग और अनेकांत अलग

स्याद्वाद यानी क्या? ये तीन सौ साठ डिग्रियाँ हैं, तो (हमें) वाणी ऐसी बोलनी चाहिए

कि किसी भी डिग्री के प्रमाण को ठेस न लगे। सभी धर्म डिग्री पर खड़े हैं। वे सभी धर्म अपने-अपने दृष्टि बिंदु पर खड़े हैं और वहीं से देखते हैं और फिर एक-दूसरे से कहते हैं कि, 'आपका गलत है।'

प्रश्नकर्ता : लेकिन स्याद्वाद तो ऐसा कहता है कि, 'सभी सत्य हैं'।

दादाश्री : हाँ, स्याद्वाद कहता है कि, 'आप सभी सत्य हो।' अत: किसी के प्रमाण को ठेस नहीं लगती।

प्रश्नकर्ता : फिर, अनेकांत वाद क्या है?

दादाश्री : अनेकांत वाद अर्थात् एकांतिक नहीं। एकांतिक में आप निश्चित करते हो कि 'सिर्फ, इतना ही अपना सत्य है, बाकी का अपना नहीं है।' उसे आग्रह रूपी कहा जाता है। एकांतिक यानी आग्रह, कि 'हमारा धर्म ऐसा ही है।' सांप्रदायिक यानी खुद का बाड़ा बना लिया कि ऐसा ही होना चाहिए। आप जिस मत को लेकर बैठे उतना ही आपका बनाया हुआ सत्य है। और अनेकांत अर्थात् बनाया हुआ सत्य नहीं, सर्वांश सत्य है। 'हम तो ऐसा करते हैं, हम ऐसा नहीं करते', वह सब एकांतिक कहलाता है। जबकि अनेकांत यानी निराग्रही। अन्एकांत! ये एकांतिक तो हठाग्रही हो गए हैं। जितने संप्रदाय वाले हैं वे खुद ही कहते हैं कि 'हमारा मत एकांतिक है, हमारा जो मत है उस मत के अनुसार ही चलेंगे।' जबकि भगवान का मार्ग अनेकांत है। वे कहीं भी अभिनिवेश नहीं करते, कहीं भी दृष्टि राग नहीं करते।

प्रश्नकर्ता : दृष्टि राग और निष्पक्षपाती में क्या अंतर है?

दादाश्री : दृष्टि राग वह अलग चीज़ है। दृष्टि राग तो एक ही जगह, एक ही कॉर्नर पर, उसे ऐसा लगा कि 'यही सत्य है और इतनी ही डिग्री का सत्य है', वहीं पर वह चिपका रहा है, वहाँ से वह हटता ही नहीं है। उसे दृष्टि राग कहा है। जबकि निष्पक्षपाती, वह तो वीतरागता है। यदि एक दिन के लिए भी निष्पक्षपाती बन जाए न, एक घंटे के लिए भी निष्पक्षपाती बन जाए न, तो भी मैं कहूँ कि, 'भगवान है तू'! अरे! एक मिनट के लिए भी यदि निष्पक्षपाती बन जाए न, तो भी मैं कह दूँ कि, 'तू भगवान है!'

अत: अनेकांत वाद तो कहीं भी रुक नहीं जाता। इस अनेकांत का अर्थ तो बहुत समझने जैसा है। अत: अनेकांत और स्याद्वाद ये दोनों शब्द एक समान नहीं हैं। स्याद्वाद अलग है और अनेकांत अलग है।

अन्एकांत यानी, जो एकांतिक नहीं है ऐसा अन्एकांत! कैसा है न भगवान का शब्द! स्याद्वाद! सभी डिग्रियों से, सभी व्यू पोइन्ट से बात करना। इसलिए स्याद्वाद वाणी को प्रत्यक्ष सरस्वती कहा जाता है।

व्यवहार में स्याद्वाद व अनेकांत

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद सिद्धांत का उपयोग रिलेटिव में होता है क्या?

दादाश्री : स्याद्वाद रियल में नहीं होता, वह सब रिलेटिव में होता है।

प्रश्नकर्ता : यह सत्य है क्या कि सत् में स्याद्वाद नहीं होता?

दादाश्री : सत् अर्थात् रियल और रियल में स्याद्वाद हो ही नहीं सकता न!

प्रश्नकर्ता : क्या व्यवहार में अनेकांत वाद का समन्वय होता है? होता है तो कैसे?

दादाश्री : निश्चय में तो अनेकांत वाद है ही न! निश्चय जो है, उसमें तो वाद है ही नहीं। अत: यह तो व्यवहार में ही अनुकूल आता है। यानी कि जितने भी वाद हैं, वे व्यवहार में ही हैं। एकांतिक वाद भी व्यवहार में है और अनेकांत वाद भी व्यवहार में है। आग्रही वाणी भी व्यवहार में है और स्याद्वाद वाणी भी व्यवहार में है। लेकिन स्याद्वाद वाणी अंतिम वाणी कहलाती है, टॉप मोस्ट वाणी कहलाती है। वाणी का सार आ गया। अनेकांत व एकांतिक का सार आ गया। यों डेवलप होते-होते एकांतिक में से डेवलप होता है।

प्रश्नकर्ता : रिलेटिव मार्ग को एकांत और रियल मार्ग को अनेकांत मान सकते हैं या नहीं?

दादाश्री : रियल मार्ग में तो, एकांत या अनेकांत जैसी कोई चीज़ ही नहीं होती। रियल यानी रियल। उसमें एकांत या अनेकांत ऐसे कोई विशेषण होते ही नहीं। सारे विशेषण रिलेटिव में ही होते हैं इसलिए रिलेटिव में एकांतिक और अनेकांत हैं। जो लोग रिलेटिव में आग्रही हैं, कि 'हमारा सत्य है', ऐसा जो आग्रह रखते हैं, वह एकांत कहलाता है। और जो सभी के धर्म को, सभी के सत्य को पकड़ता है और अनेकांत की दृष्टि से देखता है, दुराग्रह नहीं करता, आग्रह नहीं रखता तब वह अनेकांत कहलाता है। जब किसी भी धर्म को ज़रा भी ठेस नहीं लगे तब वह अनेकांत कहलाता है लेकिन वह रिलेटिव है, रियल नहीं है। रियल में कोई विशेषण है ही नहीं। विशेषण रिलेटिव में ही होता है क्योंकि वाणी खुद ही रिलेटिव है। वाणी रियल है ही नहीं। वह एकांतिक, और अनेकांत भी वाणी के स्पर्श से ही हैं।

निराग्रही हैं, ऐसा भी आग्रह नहीं

हमारा ऐसा आग्रह भी नहीं है, कि हम निराग्रही हैं, इसे कहते हैं स्याद्वाद! निराग्रही होना वह वीतराग का मार्ग है। हर जगह से आग्रह छोड़ देता है। सत्य के आग्रह को भगवान ने 'अज्ञानता' कहा है। 'हम' में नाम मात्र भी आग्रह नहीं है। किसी भी बात के लिए हमारा ज़रा भी ग्रह या आग्रह नहीं है कि, 'ऐसा ही हो!' एक सेकन्ड के लिए भी नहीं न! 'यह सही है, यह सत्य है', ऐसा भी हमारा आग्रह नहीं है। 'यह ज्ञान हुआ है', ऐसा भी आग्रह नहीं है। आप ऐसा कहो कि 'वह गलत है' तो भी आग्रह नहीं। जो आपकी दृष्टि में आया, वही सही है।

हम यों दिखने में तो भोले दिखाई देते हैं, बालक जैसे दिखाई देते हैं लेकिन हैं बहुत पक्के। किसी के साथ हम बैठे नहीं रहते, चलने ही लगते हैं। हम अपनी 'प्रोग्रेस' (प्रगति) कहाँ छोड़ सकते हैं?

हम एक बार विनती करके देख लेते हैं। बाकी, हम तो बात को छोड़ देते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। हम आपको समझा देते हैं लेकिन यदि आप अपनी बात पर अड़े रहो तो, हम तुरंत ही छोड़ देते हैं। हम समझ जाते हैं कि, 'इन्हें दिखाई नहीं देता,' तो हम कब तक बैठे रहें? बैठे नहीं रहना चाहिए न? क्योंकि उसे आगे दिखाई ही नहीं देता न!

जहाँ स्याद्वाद वहाँ निष्पक्षता

प्रश्नकर्ता : आप ऐसा कह रहे थे कि, 'दुनिया के तमाम धर्म हमें मान्य हैं, हम एक्सेप्ट करते हैं। दुनिया के तमाम संप्रदायों के ज्ञान को हमारा विज्ञान एक्सेप्ट करता है।'

दादाश्री : वह तो हम कहते ही हैं न!

यदि स्वीकार नहीं करेंगे न, तब तो, हम उस फकीर जैसा हो जाएगा। 'फकीर बस्ती वालों की नहीं सुनता और बस्ती वाले फकीर की नहीं सुनते'। यह तो हिलमिल कर अपना विज्ञान सर्वश्रेष्ठता दिखाता है।

मैं अनेकांत वाणी बोलता हूँ। एकांतिक यानी यह हमारा सत्य और उसका गलत। वाणी वीतराग होनी चाहिए। वीतराग में कोई भी गच्छ या मत नहीं होता। कोई संप्रदाय नहीं होता, संप्रदाय रहित होता है, अनेकांत होता है। तो मैं यह अनेकांत वाणी बोलता हूँ। किसी भी धर्म के प्रमाण को ठेस नहीं लगती इसलिए मेरे पास स्थानकवासी, श्वेतांबरी, दिगंबरी, वैष्णव, मुस्लिम, पारसी, सभी लोग सुनने आते हैं, यह अनेकांत वाणी है इसलिए।

कोई अपने धर्म की बातें कर रहा हो, वह मीठी-मीठी बातें करें तब भी क्या आपको समझ में आ जाता है कि यह सत्य है यह गलत है? तुरंत समझ में आ जाता है। नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, तुरंत ही।

दादाश्री : हाँ, तुरंत समझ में आ जाना चाहिए।

आपने कहीं पक्षपाती वाणी सुनी है क्या? जो हमें मत का रंग चढ़ाए, वह सारी वाणी पक्षपाती है। यह हमारा, यह हमारा...

जहाँ अलग-अलग पक्ष हैं, उसे वीतराग धर्म नहीं कहेंगे क्योंकि भगवान का धर्म अनेकांत है और स्याद्वाद है। भगवान का मार्ग किसे कहेंगे कि जहाँ पक्षपात न हो, निष्पक्षपात हो। वेदांती आकर बैठें तो जैन के आचार्य का सुनकर खुश हो जाएँ। जबकि यहाँ तो, यदि कोई एक संप्रदाय के आचार्य बोलें तो दूसरे संप्रदाय वाले उठकर चले जाते हैं। यानी वाणी कोई किसी की सुनता ही नहीं।

बाहर सारी वाणी पक्ष वाली है इसीलिए तो समकित नहीं होता। समकित पूरी तरह से रुका हुआ है। यदि कोई मन में ऐसा मानता हो कि मुझे समकित हो जाएगा तो वह उसकी भूल है।

उनकी वाणी एक पक्षीय होती है, पक्षपाती होती है। एक पक्ष वाले साधु हों और दूसरे पक्ष वाले साधु हों तो जब वे दोनों बोलते हैं न, तो दोनों की वाणी पक्षपाती होती है। अतः सामने वाले को कड़वी जहर जैसी लगती है। हमारा ऐसा नहीं होता। फिर भगवान की तो बात ही क्या? देखो हमारी वाणी इतनी अच्छी है। सभी साथ बैठते हैं फिर भी मेरी बात पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती कि, 'आप पक्षपाती हैं।' तो फिर भगवान का कैसा रहता होगा!

स्वरूप स्याद्वाद का...

प्रश्नकर्ता : अब अंत में स्याद्वाद का संक्षिप्त स्वरूप समझाइए।

दादाश्री : स्याद्वाद अर्थात् ऐसी वाणी जो किसी भी धर्म को किंचित्मात्र भी नुकसान न पहुँचाए। इतने सारे धर्म हैं, उनमें से किसी भी धर्म की ज़रा सी भी हिंसा न हो। इसे और अधिक गहनता से देखें तो, किसी व्यक्ति के विचारों की ज़रा भी हिंसा न हो, उसे कहते हैं स्याद्वाद वाणी। किसी धर्म की निंदा हुई, तो उसमें फिर खुद सही साबित हुआ और सामने वाले को झूठा ठहराया। वह स्याद्वाद नहीं है। स्याद्वाद वाणी में हिंसा नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद में अहिंसा का ही निरूपण होता है या अन्य कोई एंगल (दृष्टिकोण) होते हैं?

दादाश्री : नहीं, सिर्फ अहिंसा का ही, अन्य कुछ नहीं। अहिंसा में न आए ऐसी कोई चीज़ नहीं है। यदि आप अहिंसा का विवरण समझो तो इस दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं है कि जो अहिंसा में न आती हो।

वाणी स्याद्वाद पर लागू होती है और प्रमाण अनेकांत पर लागू होता है। किसी डिग्री के प्रमाण को ठेस न लगे, किसी धर्म के प्रमाण को ठेस नहीं लगनी चाहिए। ऐसा हम कहते हैं न, तो इसमें किसी के भी प्रमाण को ठेस नहीं लगती और यदि प्रमाण को ठेस लग भी जाए तो हम माफी माँग लेते हैं। किसी के प्रमाण को ठेस लगे, ऐसा तो होना ही नहीं चाहिए न! वैसा होना ही नहीं चाहिए न! प्रमाण को ठेस क्यों लगनी चाहिए? अपना यह मार्ग किसी को ठेस पहुँचाने का नहीं है। क्योंकि वह उसका माना हुआ, हर एक का प्रमाण अलग-अलग ही होता है। और यदि कोई माँसाहार करे तो, हम उसमें दखल नहीं दे सकते और कोई फ्रूट खाता है और कोई फ्रूट नहीं खाता, फिर भी हम ऐसे दखल नहीं दे सकते।

स्याद्वाद वाणी यानी वीतराग वाणी, जिससे किसी के प्रमाण को ठेस न लगे। भले ही फिर कोई कसाई आए। कसाई उसके अपने धर्म में ही है। हर कोई अपने-अपने धर्म में ही है। जो भगवान को नहीं मानता न, वह भी धर्म में ही है, धर्म के बाहर तो वह पल भर भी नहीं रहता। धर्म के बगैर तो मनुष्य यहाँ एक क्षण भी जी नहीं सकता लेकिन साथ ही अधर्म भी होता है। अधर्म बढ़ जाता है। यदि आत्मा है, तो धर्म तो होना ही चाहिए। अंत में चाहे वह भगवान को नहीं मानता हो, मूर्तियों को नहीं मानता हो, लोग उसे नास्तिक कहते हों, फिर भी यदि वह नीति को तो मानता हो तो नीति तो भगवान की आज्ञा है। वह सब से बड़ा धर्म कहलाता है। यानी कि कुछ न कुछ तो मानता ही है। मान्यता के बगैर जी ही नहीं सकता न! इसलिए यह सब अच्छा कहा है।

किसी के भी धर्म के प्रमाण को किंचित्मात्र ठेस न लगे, अर्थात् आदिवासी इतना बड़ा पत्थर लेकर उसकी पूजा करते हों और उनकी श्रद्धा पर यदि आप टिप्पणी करो तो वह भी स्याद्वाद वाणी नहीं है। जो वाणी, हर एक की श्रद्धा को एक्सेप्ट करे, उस वाणी को स्याद्वाद कहा जाता है।

स्याद्वाद में बातें ऐसी ही होनी चाहिए जो सीधी हों और उसके काम आएँ। हमारी वाणी स्याद्वाद होती है। वह हर एक को अनुकूल आती हैं। भले ही वह किसी भी धर्म का पालन करता हो फिर भी अनुकूल आती है।

जब किसी के भी धर्म के प्रमाण को ठेस लगे तब उसे दु:ख होता है। सभी धर्म वाले इकट्ठे हों लेकिन किसी के प्रमाण को ठेस न लगे, ऐसी वाणी बोलनी चाहिए। तो यह स्याद्वाद वाणी बोलते हैं तभी यहाँ पर सभी धर्म के लोग इकट्ठे होते हैं। किसी भी धर्म की ज़रा सी भी हिंसा नहीं होती।

यदि यहाँ पर कोई साधु आकर कहे कि 'भाई, हमें तो गुरु की ज़रूरत नहीं है। हम तो, देरासर और मूर्ति पर ही अधिक ध्यान देंगे'। तब भी भगवान कहेंगे कि 'उनकी दृष्टि से वह ठीक है'। तब, एक व्यक्ति कहे कि 'नहीं भाई, हमें तो गुरु पर ही ममता है, मूर्ति पर बहुत ज़्यादा ममता नहीं है'। तब भी भगवान कहेंगे कि 'ठीक है'। कोई दूसरा व्यक्ति आकर कहे कि 'साहब, मैं तो तप ही करूँगा'। तब भी भगवान कहेंगे कि 'ठीक है।' उसे कहते हैं स्याद्वाद।

स्याद्वाद में किसी से मतभेद नहीं

स्याद्वाद अर्थात् तीन सौ साठ डिग्री। ये सभी, किसी एक डिग्री वाले, दूसरे डिग्री वाले को गलत कहते हैं, धर्म वाले। इन तीन सौ साठ डिग्रियों में सभी धर्म के मनुष्य आ जाते हैं। सेन्टर में जो चीज़ है, सेन्टर की उस चीज़ के लिए हर एक के व्यू पोइन्ट अलग-अलग हैं। सेन्टर में देखने का हर एक का व्यू पोइन्ट अलग-अलग होता है। अत: स्वाभाविक रूप से लोगों में मतभेद होते ही हैं। एक सौ पच्चीस डिग्री वाला वहाँ से ऊपर देख रहा होता है, डेढ़ सौ वाला वहाँ से ऊपर देख रहा होता है तो डिफरेन्स रहता है। ऐसे डिफरेन्स होना तो स्वाभाविक है। आपके मतभेद भी स्वाभाविक हैं, मैं ऐसा कहता हूँ।

लेकिन स्याद्वाद यानी क्या? जिसे किसी से मतभेद नहीं है। जो सभी धर्मों को एक्सेप्ट करता है, सभी डिग्रियों को एक्सेप्ट करता है।

जबकि वे तो आमने-सामने, एक कहता है, 'तेरा गलत' और दूसरा कहता है, 'तेरा गलत'। मैं सेन्टर में जाकर वापस आया हूँ यहाँ, तीन सौ छप्पन डिग्री पर। अत: इस संसार में मेरा किसी से मतभेद है ही नहीं। मुझे गाली दे, मारे, चाहे कुछ भी करे लेकिन मेरा उससे मतभेद नहीं होता। क्योंकि मेरा मन ही नहीं है। यदि मन हो तो मतभेद होते हैं।

और मेरा जो मन है, वह कैसा है? मन तो अंत तक रहेगा ही, मोक्ष में जाने तक। लेकिन मेरा मन कैसा है? प्रतिक्षण चलने वाला। कैसा? प्रतिक्षण चलता रहता है और आपका मन कैसा है? यदि किसी जगह पर चिपक जाए तो पंद्रह मिनट तक, आधे घंटे तक वहीं पर मंडराता रहता है। जैसे मक्खी मंडराती रहती है न! जिस तरह मक्खी गुड़ पर मंडराती रहती है न, उसी तरह (मन) मंडराता रहता है। एक-एक घंटे तक, दो-दो घंटे तक मंडराता रहता है जबकि हमारा मन कहीं भी नहीं मंडराता। हमारा मन क्षणवादी है और महावीर का मन इतना अधिक सूक्ष्म था कि समयवादी था। कैसा था? समयवादी। मेरा यह क्षणवादी है इसलिए ज़रा इतना स्थूल है। अंत में तो इसे सूक्ष्म (पतला) होना ही पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यदि मन नहीं होगा तो मत भी नहीं रहेगा न?

दादाश्री : हाँ, मत ही नहीं रहेगा। अब हमारा मत ही नहीं रहा। हमारा मन ऐसी स्टेज पर आ चुका है कि मत ही नहीं रहा। हमारा मत और उसका मत ऐसा कुछ रहा ही नहीं। मैं सभी जानवरों-वानवरों, सभी में हम एक को ही देखते हैं। हमें सभी में वही दिखाई देता है, मुख्य वस्तु। और दूसरी चीज़ से हमें कुछ लेना-देना नहीं है। और हम तो, जब तक हो सके तब तक दूसरी चीज़ के लिए हेल्प फुल हों जाते हैं।

सेन्टर में आए हुए को समझ में आता है स्याद्वाद

प्रश्नकर्ता : ये बहन पारसी हैं और एम.ए. में जो सारे जैनिज़म के सब्जेक्ट होते हैं न, उनमें थिसिस लिखनी पड़ती है, तो ये स्याद्वाद और सांख्य दोनों में थिसिस लिखकर फर्स्ट क्लास पास हुई हैं।

दादाश्री : उन्होंने स्याद्वाद की स्टडी की है न, तो स्टडी करवाने वाले लोग तो अभी यहाँ मौजूद हैं न। बहन ने स्टडी की है, इनके ऊपर भी स्टडी करवाने वाले गुरु तो हैं न? स्याद्वाद क्या है, उसका संसार को भान ही नहीं है। यह तो उसकी परछाई है, यह जो संसार में पढ़ाई

जाती है न, वह तो परछाई है। स्याद्वाद तो ग़ज़ब की चीज़ है! वर्ना, इस बहन को उनके गुरु ने सिखाया है तो, गुरु तो जानते ही होंगे न स्याद्वाद? उनके कोई गुरु तो होंगे न? यानी उन सभी गुरुओं के गुरु तो होंगे या नहीं? स्याद्वाद, किताब में लिखा जा सके, ऐसा है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद नापा नहीं जा सकता। असीम है।

दादाश्री : हाँ, यह स्थूल में है। हम कबूल करते हैं कि स्थूल भाषा में (स्याद्वाद) है। सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम, भगवान ने जो सूक्ष्मतम बताया है, वह स्याद्वाद ग़ज़ब की चीज़ है! स्थूल रूप से स्याद्वाद क्या है, वह मैं आपको बताता हूँ कि इस थ्री हंड्रेड एन्ड सिक्स्टी डिग्री में, पूरा वर्ल्ड व्यू पोइन्टस में हैं। ये फ़ॉरेन वाले वन हंड्रेड एन्ड ट्वेन्टी फाइव डिग्री पर हैं, तो मुस्लिम वन फिफ्टी पर हैं। दूसरे लोग इससे आगे पौने दो सौ पर हैं, कोई दो सौ पर हैं, हिन्दु सवा दो सौ पर हैं, जैन ढाई सौ पर हैं। इस तरह सभी अपनी-अपनी डिग्री पर हैं। क्योंकि वे अलग-अलग डिग्री पर हैं इसलिए मतभेद है। जब सेन्टर में आ जाएगा तब किसी भी डिग्री के साथ कोई मतभेद नहीं रहेगा और सभी डिग्री वालों को समझ सकेगा।

प्रश्नकर्ता : डिग्री में ही उसका खुद का जो सर्कल है, वह यदि उस सेन्टर को समझ जाए तो फिर उसे कुछ रहेगा ही नहीं न।

दादाश्री : सेन्टर को समझ जाए, सेन्टर क्या है वह समझ में आ गया तो फिर तो कुछ रहा ही नहीं। सेन्टर को कब समझ पाएगा? जब डिग्रियों को पार करते-करते आगे बढ़ेगा, तभी सेन्टर को समझ सकेगा। या फिर किसी व्यक्ति ने पार नहीं की हों, दो सौ सत्तर डिग्री पर आया हुआ व्यक्ति, जिसकी तीन सौ साठ डिग्री पूर्ण नहीं हुई हैं और यदि उसे ज्ञानी पुरुष मिल जाएँ और वह ज्ञानी पुरुष से कहे कि, 'मुझे इस सेन्टर का दृष्टि बिंदु दिखा दीजिए,' तो ज्ञानी पुरुष दिखा देंगे। वर्ना खुद अपने आप आना पड़ेगा। ज्ञानी पुरुष मिल गए, इसीलिए इसे लिफ्ट मार्ग कहा है न!

प्रश्नकर्ता : संक्षेप में ऐसा कहना चाहते हैं कि सेन्टर के बगैर सर्कल बनेगा ही नहीं।

दादाश्री : हाँ, सेन्टर के बगैर सर्कल बनेगा ही नहीं।

'व्यू पोइन्ट' में रहना, 'व्यू पोइन्टस' के साथ 'एडजस्ट' होना और सेन्टर में भी रहना, वह बहुत कठिन चीज़ है।

स्याद्वाद में एक, फिर भी अलग

प्रश्नकर्ता : 'स्याद्वाद यानी सिर्फ एक में ही रहना और अलग-अलग भाव से रहना', यह समझाइए।

दादाश्री : हाँ, स्याद्वाद किसे कहते हैं कि सिर्फ एक में ही रहना और अलग-अलग भाव से रहना। हाँ, रहना है सिर्फ एक में, यानी कि होम डिपार्टमेन्ट में रहना और अलग-अलग भाव पर प्रकाश डालना। (व्यू पोइन्टस के साथ एडजस्टमेन्ट करना।)

फ़ॉरेन में नहीं रहना है। आप कभी होम डिपार्टमेन्ट में गए क्या? कब गए थे?

प्रश्नकर्ता : रोज़ जाते हैं!

दादाश्री : नहीं, यह तो आप फ़ॉरेन डिपार्टमेन्ट को ही होम मानते हो। होम डिपार्टमेन्ट तो, अभी देखा ही नहीं। यदि आपको अपना होम

डिपार्टमेन्ट प्राप्त हो जाए तो फिर फ़ॉरेन, फ़ॉरेन रहेगा। अभी तो, आप फ़ॉरेन का ही कल्याण करते हो और समझते हो कि मेरा कल्याण हो गया!

हमें खुद के स्वरूप में रहना है और दूसरी डिग्री वालों को एक्सेप्ट करना है। चाहे किसी भी धर्म वाला हो फिर भी हमें उसके व्यू पोइन्ट को एक्सेप्ट करना है कि, 'वह उसके व्यू पोइन्ट से, उसकी दृष्टि से सही है।' हम अपने हिसाब से सही हैं लेकिन वह उसके अपने हिसाब से ठीक है। खुद के भाव में रहकर हमें सभी भावों में रहना चाहिए। ताकि किसी को ऐसा न लगे कि यह गलत है। स्याद्वाद यानी सभी का अपने-अपने व्यू पोइन्ट से सही ही है, हम ऐसा कहना चाहते हैं। खुद का सही है ऐसा समझता है खुद का सही है इसलिए सामने वाले का गलत है, वह बात पक्की है लेकिन किसी को गलत ठहराने पर उसे दुःख होता है वह भी पक्का है। किसी को दुःख हो ऐसा करने को धर्म कह ही नहीं सकते, वह भी पक्का है। इसलिए यह सब ध्यान में रखा गया है। किसी को अड़चन न हो, ऐसा है यह स्याद्वाद मार्ग है।

अपने यहाँ, सभी धर्म के लोग इकट्ठे होते हैं। लेकिन जब मैं बोलता हूँ तो, किसी को भी पक्षपाती नहीं लगता क्योंकि मेरे विचार ही पक्षपाती नहीं हैं। यदि मैं किसी गच्छ में बैठा रहूँ तो मैं पक्षपाती हो जाऊँगा। यानी कि एक धर्म वाले साधु कुछ बातचीत कर रहे हों और यदि दूसरे धर्म वाले साधु वहाँ पर आ जाएँ तो, उन्हें कषाय हो जाते हैं कि, 'भला, यह कहाँ से आ गया?' और फिर जब वे बातचीत करते हैं तो भी सब अपने-अपने पक्ष की ही बातें करते हैं। तो उससे हमें पता चल जाता है कि ये इस धर्म वाले हैं, ये इस धर्म वाले हैं। हमें यह भी पता चल जाता है कि इनकी दुकान कौन सी है! जबकि स्याद्वाद यानी हमारी कोई दुकान नहीं है, 'सब' हमारा है और निश्चय से, जो 'हमारा' है वह हमारा।

बहुत अच्छी बातें हैं ये, भगवान की बातें तो बहुत गहन और सूक्ष्म हैं, समझने जैसी हैं। हमारी बातें ऐसी हैं कि समझने में थोड़ी देर लगती है। लेकिन यदि समझ गए तो काम हो जाएगा।

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में ओनलाइन सत्संग कार्यक्रम

30 अगस्त (सोम) - रात 10 से 12-30 **जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष कार्यक्रम**

पर्युषण पारायण - वर्ष 2021

4 से 12 सितम्बर : आप्तवाणी 14 भाग-2 गुजराती ग्रंथ पर **सत्संग पारायण**

नोट : आप्तवाणी-14 भाग-2 गुजराती बुक के पेज नंबर 241 से वाचन होगा।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** (079) 27540408, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

पूज्य नीरू माँ/पूज्य दीपक भाई को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत

- 'दूरदर्शन गिरनार' पर रोज सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10
- 'अरिहंत' चैनल पर रोज सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3, रात 8 से 9
- 'वालम' पर रोज 6 से 6-30 (सिर्फ गुजरात राज्य में)
- 'स्वरश्री' पर हर रोज सुबह 11-30 से 12 (सिर्फ गुजरात राज्य में)
- 'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8, रात 8-30 से 9-30 (हिन्दी में)
- 'साधना' पर रोज सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 (हिन्दी में)
- 'उड़ीसा प्लस' टी.वी. पर रोज सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में-केवल उड़ीसा राज्य में)
- 'दूरदर्शन सह्याद्रि' पर रोज सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- 'आस्था कन्नड़ा' पर रोज दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)

USA - Canada

- 'TV Asia' पर रोज सुबह 7-30 से 8 EST

U K

- 'वीनस' टी.वी. पर रोज सुबह 8 से 8-30 GMT (हिन्दी में)
- 'वीनस' टी.वी. पर रोज सुबह 8-30 से 9 GMT
- 'MA TV' पर रोज शाम 5-30 से 6-30 GMT

Australia

- 'Rishtey' पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji - NZ - Singapore - SA - UAE

- 'Rishtey' पर हर रोज सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में)

USA - UK - Africa - Australia

- 'आस्था ग्लोबल' पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30 IST
  (डिश टी.वी. चैनल UK -849, USA-719) (गुजराती और हिन्दी में)

अगस्त 2021
वर्ष-16 अंक-10
अखंड क्रमांक - 190

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

वीतराग मार्ग स्याद्वाद व अनेकांत होता है

एकांतिक को तो पूरा संसार समझता है लेकिन 'अनेकांत' को नहीं समझता । शुभ को 'एकांतिक' कहा जाता है, जबकि शुद्ध को 'अनेकांत' कहा जाता है। अनेकांत यानी आग्रह नहीं, हर एक सत्य को स्वीकार करता है। अनेकांत से मोक्ष है। खुद के दृष्टि बिंदु के आधार पर ही चलना, अपने खुद के दृष्टि बिंदु को सत्य ठहराना, उसे एकांतिक कहा जाता है। जबकि वीतराग धर्म 'अनेकांत' है। जो सभी के दृष्टि बिंदुओं को खुद में समा लेता है, उसे वीतराग धर्म कहते हैं। और जब 'स्याद्वाद' को समझ जाएगा तब फिर मोक्षमार्ग हाथ में आएगा। स्याद्वाद यानी किसी भी धर्म के प्रमाण को ठेस न लगे। किसी भी धर्म की 'डाइरेक्ट' भूल न दिखाए। सापेक्ष-निरपेक्ष दोनों को 'एक्सेप्ट' करे, उसे स्याद्वाद कहते हैं। वीतराग मार्ग अनेकांत व स्याद्वाद होता है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.